अक्तूबर 2015

# दादावाणी

कीमत ₹ 10

## नौ कलमें

सारांश, सभी शास्त्रों का !

**संपादक : डिम्पल महेता**
वर्ष : 10 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 120
**अक्तूबर 2015**

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन :** (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

**Printed & Published by**
**Dimple Mehta on behalf of**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Printed at**
**Amba Offset**
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Published at**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Total 32 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**१५ साल**
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
**वार्षिक**
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## वैज्ञानिक रहस्यों से भरपूर 'नौ कलमें'

### संपादकीय

क्रमिक मार्ग के ज्ञानी पुरुषार्थ करके, अत्यंत कष्ट झेलकर आत्मा का अनुभव प्राप्त करके मोक्ष में गए। संतों व महान पुरुषों ने लोगों के अपमान सहन करके प्रेम संपादन किया, विकारों पर विजय प्राप्त की, खाने-पीने में संयम रखा, इतना ही नहीं बल्कि लोक कल्याण के लिए जीवन जी गए। सामान्य व्यक्ति के लिए इस मार्ग का अनुसरण करना असंभव लगता है। इसके अलावा शास्त्रों में भी ऐसा ही कहा है कि आचरण शुद्ध करो, लेकिन जहाँ शक्ति ही न हो वहाँ उपाय क्या है?

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने अपनी निजी शोध के रूप में जगत् को काल के अनुरूप 'नौ कलमें,' दी हैं। जो कि दादाश्री के खुद के जीवन का नित्यक्रम है, अनुभव सिद्ध है और इसीलिए क्रियाकारी हो जाती हैं। नौ कलमें दिन में तीन बार पढ़नी चाहिए। जैसे प्रधानमंत्री की चिट्ठी और किसी व्यापारी की चिट्ठी में फर्क होता है, उसी तरह ज्ञानीपुरुष द्वारा जो दिया गया हो उसमें बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

मनुष्य का स्वभाव कैसा है, कि जैसी प्रकृति होती है वैसा ही खुद बन जाता है। और जब प्रकृति नहीं सुधरती तब मार-ठोककर सुधारने का प्रयत्न करता है। दादाश्री कहते हैं ''अगर प्रकृति न सुधरे तो तू अंदर का सुधार न, कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए' और हे दादा भगवान! मुझे शक्ति दीजिए।'' इससे क्या लाभ हुआ? एक तो खुद का अभिप्राय बदल गया व प्रकृति के विरुद्ध बैठा और दूसरा परम विनयता उत्पन्न हुई। यानी यह अक्रम विज्ञान ऐसा सिखाता है कि यह (जो) बिगड़ गया है, वह ऐसे नहीं सुधरनेवाला, लेकिन इस तरह से उसे सुधार। फिर अपनी रिस्पोन्सिबिलिटी नहीं रहती।

हमें इन 'नौ कलमों' के अनुसार सिर्फ भावना ही करनी है, इसके अनुसार करने नहीं लग जाना है और एकदम से होगा भी नहीं। जितना हो पाए उतना जानना है कि इतना हो पाता है और इतना नहीं हो पाता। उसके लिए क्षमा माँगनी है और साथ ही यह शक्ति माँगनी है। शक्ति प्राप्त होगी तो सहायक होती जाएँगी।

नौ कलमें तो तमाम शास्त्रों का सार है, इन्हें बोलने से पाप भस्मीभूत हो जाते हैं, दखलंदाज़ी कम हो जाती हैं और अच्छी तरह से पाँच आज्ञा में रह सकते हैं। सारे जगत् के लिए कल्याणकारी ऐसा यह प्रतिक्रमण है। ये कलमें तो जगत् के ऋणानुबंध से छुड़वा देती हैं। अब तक हुए दोष मिट जाते हैं, ढीले पड़ जाते हैं। भरे हुए माल का फोर्स आए तब अगर नौ कलमें बोलें तो उस फोर्स में हम रंग नहीं जाएँगे, हम पर असर नहीं होगा और फोर्स खत्म हो जाएगा। जब मन संसार की ओर खिंचने लगे तब नौ कलमें बोलने से टुकड़े होकर पूरी लिंक टूट जाएगी और इस जन्म की एवं अगले जन्म के लिए सलामती हो जाएगी।

नौ कलमें उपयोगपूर्वक भावना करने की चीज़ है। दादाश्री कहते हैं, 'हम जिनका पालन करते हैं, हमेशा के लिए जो हमारे अमल में है आपको भी वही शक्तियाँ माँगने के लिए दे रहे हैं। सिर्फ वे शक्तियाँ माँगो। शक्ति आपको एक्ज़ेक्टनेस में लाकर रख देगी।' अत: अवश्य आराधन करने जैसी चीज़ है। दादाश्री उद्बोधित वाणी में से इससे संबंधित विशेष संकलन किया गया है, जो महात्माओं को मोक्ष मार्ग के पुरुषार्थ में सहायक होगा, यही अभ्यर्थना।

**- जय सच्चिदानंद**

## पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

# वैज्ञानिक रहस्यों से भरपूर 'नौ कलमें'

### कर लो यह भावना एक जन्म

मैं आपको एक पुस्तक पढ़ने के लिए दे रहा हूँ। बड़ी पुस्तकें नहीं, एक छोटी सी पुस्तक आपके लिए। उसे पढ़ना ज़रा, यों ही जरा सा! यह दवाई दे रहा हूँ, यह पढ़ने की दवाई है। यह जो 'नौ कलमें' हैं, इन्हें सिर्फ पढ़ना ही है, यह करने की दवाई नहीं है। बाकी आप जो करते हो वह सब ठीक है। लेकिन यह तो भावना करने की दवाई है। इसलिए यह जो दे रहे हैं, उसे पढ़ते रहना, इससे तमाम प्रकार के अंतराय टूट जाएँगे।

### नौ कलमों में ग़ज़ब की शक्ति

**प्रश्नकर्ता :** इन नौ कलमों में लिखा है कि 'मुझे शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए', तो ऐसा पढ़ने से हमें शक्ति मिल जाएगी?

**दादाश्री :** ज़रूर! ये 'ज्ञानीपुरुष' के शब्द हैं! प्रधानमंत्री की चिट्ठी हो और यहाँ के एक व्यापारी की चिट्ठी हो, तो उसमें क्या कोई फर्क नहीं है? आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे? हाँ, यानी कि यह 'ज्ञानीपुरुष' की बात है। अगर इसमें बुद्धि लगाएगा तो मनुष्य पागल हो जाएगा। ये बातें तो बुद्धि से परे हैं।

क्रमिक मार्ग में इतना बड़ा शास्त्र पढ़ें या फिर इतनी नौ कलमें बोलें तो बहुत हो गया। नौ कलमों में इतनी ग़ज़ब की शक्ति रखी गई है कि समझ से परे है। जब हम समझाएँ तब समझ में आएगा।

### ज़रूरत है सिर्फ शक्ति माँगने की

एक लड़का चोर बन गया है। वह चोरी करता है। मौका मिलने पर दूसरों की जेब से पैसे निकाल लेता है। घर पर गेस्ट (मेहमान) आए तो, उन्हें भी नहीं छोड़ता। अरे, कई गेस्ट का तो लौटने का किराया खत्म हो गया हो, तो भी लड़का उनके पैसे निकाल लेता, तो गेस्ट क्या करे बेचारा? कैसे वापस माँगे? और उन लोगों से कह भी नहीं सकते क्योंकि अगर ऐसा कहे तो घरवाले लड़के को मारते इसलिए दूसरी जगह से उधार लेकर घर लौटे। क्या करे? वह लड़का जेब खाली ही कर देता था न!

अब उस लड़के को हम क्या सिखाते हैं? कि 'इस जन्म में तू दादा भगवान से चोरी न करने की शक्ति माँग।' अब इससे उसे क्या लाभ हुआ? कोई कहेगा, 'इसमें क्या सिखाया? वह तो शक्तियाँ माँगता जा रहा है और फिर चोरी तो कर ही रहा है।' अरे, भले ही चोरी करे! ये शक्तियाँ माँग रहा है या नहीं? 'हाँ, शक्तियाँ तो माँग रहा है।' तो हम जानते हैं कि यह दवाई क्या काम कर रही है! आपको क्या पता चले कि दवाई क्या काम कर रही है?

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है, वे नहीं जानते कि दवाई क्या काम कर रही है। माँगने से लाभ होता है या नहीं, वह भी नहीं समझते।

**दादाश्री :** अर्थात् इसका क्या भावार्थ है कि एक तो वह लड़का माँग रहा है कि 'मुझे चोरी न

करने की शक्ति दो।' यानी एक तो उसने अपना अभिप्राय बदल दिया। 'चोरी करना गलत है और चोरी नहीं करना सही है' ऐसी शक्तियाँ माँग रहा है। इसलिए 'चोरी नहीं करनी चाहिए,' उस अभिप्राय पर आया। सब से बड़ी बात यह कि अभिप्राय बदल गया! और अभिप्राय बदल गया इसलिए तभी से वह गुनहगार बनने से रुक गया।

फिर दूसरा क्या हुआ? भगवान से शक्तियाँ माँग रहा है, इसलिए उसमें परम विनयता उत्पन्न हुई।

अभी तक तो अहंकार से सिर्फ पागलपन ही किया है। अहंकारी इंसान पागल ही होता है। उसे पागल ही कहते हैं। लेकिन क्या करें? अहंकार जाए, ऐसा नहीं है। लेकिन शक्ति माँगने से आपके अहंकार का पागलपन खड़ा नहीं होगा और वह शक्ति प्राप्त हो जाएगी। माँगते ही तुरंत प्राप्त हो जाती है, अंदर अपार शक्ति है!

हे भगवान! शक्ति दीजिए। इसलिए वे तुरंत शक्ति देते हैं। चारा ही नहीं है न! सब को देते हैं, माँगनेवाला होना चाहिए।

इसलिए कहता हूँ न, यह तो आप माँगना, भूल जाते हो! आप तो कुछ माँगते ही नहीं, कभी भी नहीं माँगते। लेकिन टेन्डर भरने चाहिए। टेन्डर भरना आता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** यह बात आपकी समझ में आई, शक्ति माँगने की?

**प्रश्नकर्ता :** यह तो बहुत वैज्ञानिक खुलासा है। अभिप्राय बदल गया और सही माँगा।

**दादाश्री :** शक्ति दीजिए ऐसा कहता है। 'दीजिए' कहा वह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है? भगवान खुश होकर कहते हैं, 'ले'।

दूसरा उसका अभिप्राय तो बदल गया है। अन्यथा उसे मार-ठोककर अभिप्राय नहीं बदला जा सकता। उससे तो अभिप्राय मज़बूत हो जाता है, कि चोरी करनी ही चाहिए। अरे, मार-ठोककर इसका इलाज नहीं किया जा सकता! इलाज के लिए तो दादा के पास ले जा। गोद में बिठाकर समझदार बना देंगे। इलाज का जानकार चाहिए न!

## अभिप्राय बदलने से आता है परिणाम

अभिप्राय बदलना कोई सरल बात नहीं है। ऐसे गुप्त तरीके से बदले जाते हैं। ऐसे ही हम कहें कि 'चोरी नहीं करना अच्छा है। चोरी करना गलत है।' तो मन में समझ जाता है कि ये तो यों ही चोरी नहीं करने के लिए कह रहे हैं। तो राह पर नहीं आएगा। जबकि हमारी यह वैज्ञानिक खोज है।

सब से बड़ी बात तो, खुद का अभिप्राय बदल गया। लेकिन कहता है, मेरा वह अभिप्राय तो बदल गया, लेकिन भगवान अब मुझे शक्ति दीजिए। अब मुझे आपकी शक्ति की ही ज़रूरत है। मेरा अभिप्राय तो बदल गया है।

**प्रश्नकर्ता :** उससे भी ज़्यादा, देनेवाला तो बैठा है। इसलिए माँगने जैसा है।

**दादाश्री :** हाँ, जो माँगो वह देने को तैयार हूँ।

## प्रकृति सुधरेगी ऐसे

इंसान का स्वभाव ऐसा होता है कि जैसी प्रकृति वैसा ही खुद हो जाता है। जब प्रकृति नहीं सुधरती, तब कहता है 'छोड़ झंझट,' 'अरे नहीं सुधरती तो कोई हर्ज नहीं। तू अपना, अंदर सुधार न!' फिर अपनी 'रिस्पोन्सिबिलिटी' (ज़िम्मेदारी) नहीं है! ऐसी यह 'साइन्स' है! बाहर चाहे कुछ भी हो उसकी 'रिस्पोन्सिबिलिटी' है ही नहीं। इतना समझे तो हल आ जाए। आपकी समझ में आया, मैं क्या कहना चाहता हूँ?

प्रकृति तो कुछ भी करे, क्योंकि वह गैरज़िम्मेदार

है। लेकिन आप इतना बोले कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए। यह सब तो गलत है' तो आप ज़िम्मेदारी से छूट गए। अब इसमें कोई परेशानी है?

यानी यह अक्रम विज्ञान ऐसा सिखाता है कि यह जो बिगड़ गया है वह तो सुधरनेवाला है नहीं, लेकिन इस तरह उसे सुधारो।

अब क्रमिकमार्ग में इस प्रकार से नहीं सुधारते। वे तो कहते हैं, 'मार-ठोककर इसे सुधारो' अरे, नहीं सुधरेगा! यह तो प्रकृति है। कढ़ी में नमक ज़्यादा गिर जाए तो वह निकाला जा सकता है, किसी भी तरह। कढ़ी के लिए सब प्रयोग हैं, लेकिन इसके लिए उपाय इस तरह करना पड़ता है। इस उपाय से कई लोगों को फायदे हुए हैं।

## करना नहीं है इन नौ कलमों में

एक व्यक्ति से मैंने कहा कि 'इन नौ कलमों में सब समा गया है। इसमें कुछ भी बाकी नहीं रखा है। आप ये नौ कलमें रोज़ पढ़ना।' फिर उसने कहा, 'लेकिन यह नहीं हो पाएगा।' मैंने कहा, 'अरे, मैं करने को नहीं कह रहा हूँ।' 'नहीं हो पाएगा' ऐसा क्यों कहते हो? आपको तो इतना कहना है कि, 'हे दादा भगवान, मुझे शक्ति दो।' शक्ति माँगने को कहता हूँ। अंदर शक्ति आएगी तो फिर वह शक्ति काम करेगी। तुझे नहीं करना है। तो कहने लगे, 'मुझे नहीं करना है?' मैंने कहा, 'नहीं, वह शक्ति काम करेगी। अंदर पता चल जाएगा फिर काम होता रहेगा।' तो कहने लगे, 'इससे तो मज़ा आएगा।' लोगों ने तो करना सिखाया है।

फिर मुझे कहने लगे, 'ये शक्तियाँ कौन देगा?' मैंने कहा, 'मैं शक्तियाँ दूँगा।' आप जो माँगों वे शक्तियाँ देने को तैयार हूँ। आपको खुद को माँगना ही नहीं आता, इसलिए मुझे इस तरह सिखाना पड़ता है कि ऐसे शक्ति माँगना। सिखाना नहीं पड़ेगा? देखो न, यह सब सिखाया ही है न! यह मेरा सिखाया हुआ ही है न! तब वे समझ गए। फिर कहने लगे कि इतना तो हो सकता है, इतने में सब आ गया।

इसे करना नहीं है आपको। आप बिल्कुल भी मत करना। आराम से रोज़ से दो रोटियाँ ज़्यादा खाना, लेकिन ये शक्तियाँ माँगना। तब वे मुझ से कहने लगे, 'यह बात मुझे पसंद आई।'

**प्रश्नकर्ता :** पहले तो यही शंका होती है कि माँगने से शक्ति मिलेगी या नहीं?

**दादाश्री :** वही शंका गलत साबित होती रहती है। अब यह शक्ति माँगते रहते हो न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा, लेकिन आपने ये जो नौ कलमें हमें दी हैं, उन्हें रोज़ पढ़ना चाहिए या फिर एक बार पढ़ने के बाद भावना करनी चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं। रोज़ पढ़ना है यानी रोज़ भावना करनी है। रोज़ भावना करो न।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् जब तक भावना फिट न हो जाए तब तक पढ़ना चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं। फिट हो या न हो, अपनी तरह से रोज़ दो-तीन बार पढ़ लेना है। फिट या न फिट देखने की ज़रूरत नहीं है।

## बाद में आएगा वह वर्तन में

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अमल में लाने के लिए उसमें लिखा है, उस अनुसार करना पड़ेगा न?

**दादाश्री :** नहीं, इसे सिर्फ पढ़ना ही है। फिर अमल में अपने आप आ जाएगा। इसलिए यह (नौ कलमों की) किताब आप अपने साथ ही रखना और रोज़ाना पढ़ना। आपको इसके अंदर के सारे ज्ञान की जानकारी हो जाएगी। रोज़ बार-बार पढ़ने से आपको इसकी प्रेक्टिस हो जाएगी। तद्रूप हो जाओगे। आज आपको मालूम नहीं पड़ेगा कि इसमें मुझे क्या फायदा

हुआ! लेकिन धीरे-धीरे आपको 'एक्ज़ेक्ट' समझ में आ जाएगा।

यह शक्ति माँगने से फिर उसका फल वर्तन में आकर खड़ा रहेगा। इसलिए आपको 'दादा भगवान' से शक्तियाँ माँगनी हैं। और 'दादा भगवान' के पास अपार, अनंत शक्तियाँ हैं, जो माँगो सो मिले ऐसी! अर्थात् इसे माँगने से क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** शक्ति प्राप्त होगी।

**दादाश्री :** हाँ, इन्हें पालन करने की शक्ति आएगी और उसके बाद फिर पालन होगा। यों ही पालन नहीं कर सकोगे। जो करना है वह तो अलग चीज़ है। पहले जो शक्तियाँ माँगी थीं, वह अभी हो रहा है। इसलिए आपको ये शक्ति माँगते रहना है, और कुछ नहीं करना है। ये जो लिखा है वैसा झट से हो जाए ऐसा नहीं है और होगा भी नहीं। आप से जितना हो सके उसे जानो कि इतना हो पाता है और इतना नहीं हो पाता, तो उसकी क्षमा माँगनी हैं और साथ ही साथ ये शक्ति माँगनी है तो शक्ति प्राप्त होगी।

## शक्तियाँ पहुँचाएँगी उस स्टेज पर

**प्रश्नकर्ता :** मैं आठ महीनों से रोज़ नौ कलमें पढ़ता हूँ। श्रद्धापूर्वक और नियमित करता हूँ, लेकिन इसमें जो कहा गया है, मेरे वे दोष अब तक गए नहीं हैं।

**दादाश्री :** नहीं, हमें दोषों को अभी नहीं निकालना है। शक्ति भरकर रखनी है। वह एकदम से प्रकट हो जाएगी। ये तो पूरा खराब, बिगड़ा हुआ माल है। इसीलिए अब ये शक्तियाँ भरेंगे तो फिर (सब सुधर जाएगा)।

**प्रश्नकर्ता :** यानी निराश होने की ज़रूरत नहीं है, ऐसा?

**दादाश्री :** नहीं, किसी तरह से (नहीं), निराश होना होता होगा? यह निराशा तो कहाँ लेकिन एक-एक शब्द खरा सोना है।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है, यह सब तो मैं करता हूँ।

**दादाश्री :** तो ये सभी शक्तियाँ उत्पन्न होंगी।नौ कलमोंवाली शक्तियाँ माँगते रहने से काफी सालों बाद फिर अपने आप ही नौ कलमों में ही रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** इस स्टेज पर कैसे, कब पहुँच सकेंगे?

**दादाश्री :** इन्हें बोलने से स्टेज पर पहुँचने की तैयारी होगी, शुरुआत होगी। आप ये बोलोगे न तो शक्ति उत्पन्न होगी और जो शक्ति उत्पन्न होगी, वह शक्ति आपको उस स्टेज पर पहुँचाएगी। दादा भगवान से शक्ति माँगने से तुरंत ये शक्ति आ जाएगी।

शक्ति प्रकट होने के बाद वह शक्ति की तैयारी हो जाती है। फिर अपने आप ही, वह शक्ति ही काम करवाएगी, और उस स्टेज पर ले जाएगी आपको नहीं जाना है। अगर इंसान जा सकता तो कब का चला जाता। शक्ति के बगैर कैसे जाएगा? पहले माँगना है फिर शक्ति प्रकट होगी। शक्ति एकत्रित हो जाएगी, उसके बाद शक्ति काम करेगी। इसीलिए आप ये रोज़ बोलोगे तो धीरे-धीरे शक्ति प्रकट होती जाएगी लेकिन बिना बोले शक्ति कैसे प्रकट होगी? माँगे बिना शक्ति कैसे प्रकट होगी? नहीं होगी न! इसीलिए इतना आप रोज़ बोलना।

## दिस इज़ द केश बैंक

काफी लोगों के ओहोहो... लगभग हज़ारों लोगों के दुःख मिट गए हैं। सिर्फ इतनी ही चीज़ें बताता हूँ। इतनी ज़्यादा शक्ति है इसमें! और यह वाणी कैसी है? मालिकी रहित वाणी है। यह, मैं जो बोल रहा हूँ न, ऐसी मालिकी रहित वाणी वर्ल्ड में है नहीं। शायद ही कभी होती है। यह ऑरिजिनल टैपरिकॉर्ड बोल रहा है, मैं नहीं बोल रहा हूँ। इसीलिए

यह मालिकी रहित वाणी है और सर्व धर्मों का सार है, अत: यदि करोगे तो आपको बहुत उत्तम फल मिलेगा। और फिर यह केश बैंक है। तुरंत ही फल देनेवाली। क्योंकि अंदर दादा भगवान प्रकट हो गए हैं, और उन्हें मैं भी नमस्कार करता हूँ। मैं भी नौ कलमें बोलता हूँ क्योंकि ये तो चौदह लोकों के नाथ हैं। प्रकट हैं, इसलिए बोलते ही सब फल मिलेगा।

केश (नकद) शक्ति, उधार नहीं। उधार तो बहुत बार लेकर आए और वैसे के वैसे ही रहे। उधारी ने तो गरीब का गरीब ही रखा, जब गरीबी चली जाए तब जानना कि 'हाँ, रास्ता मिला...'

## शक्ति प्रकट होकर आती है वर्तन में

**प्रश्नकर्ता :** नौ कलमों को अमल में कब ला सकते हैं?

**दादाश्री :** इन्हें बोलने से वर्तन में आएगा। आपको यहाँ से एयर पोर्ट जाना हो तो अगर आप पूछो कि 'एयर पोर्ट जाने का रास्ता कौन सा है?' तब मैं कहूँ कि 'आपको रास्ता दिखा देता हूँ, उस रास्ते से आप आ जाओ तो एयर पोर्ट पहुँच जाओगे।' उसके बाद क्या बाहर निकलते ही आपको एयर पोर्ट दिखेगा? 'नहीं।' उसका नक्शा समझना पड़ेगा। नक्शा समझने के बाद चलने से एयर पोर्ट आएगा या नहीं आएगा? अत: यह सब अमल में नहीं लाना है, इसके लिए शक्ति माँगनी है। इसीलिए आप रोज़ नौ कलमें बोलो।

## चौदह लोक का सार समाया है नौ कलमों में

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, नौ कलमें बहुत अच्छी हैं। पिछले साल जब नौं कलमें पढ़ीं तब ऐसा लगा कि ये याद नहीं रख पाएँगे।

**दादाश्री :** याद नहीं रखना है, बोलना है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन हमें ऐसा लगता है कि देखकर बोलनी पड़ेंगी लेकिन इतनी इफेक्टिव लगीं कि भले ही शब्दश: याद न रहे लेकिन अपने से पूरा ही भावार्थ सुबह बोल लिया जाता है, इतनी इफेक्टिव हैं!

**दादाश्री :** हं, बहुत इफेक्टिव है, ये बहुत इफेक्टिव हैं।

ये नौ कलमें सब से बड़ी भावनाएँ हैं। इनमें पूरा सार आ जाता है, चौदह पूर्व का सार आ जाता है, तमाम शास्त्रों का सार आ जाता है। इतनी भावना ही करते रहें तो बहुत हो गया।

जब सभी धर्मों की पुस्तकें पढ़ ली जाएँ तब धर्म कहलाता है। जब सौ प्रतिशत धर्म हो जाए, तब मर्म निकलने की शुरुआत होती है। जब सौ प्रतिशत मर्म हो जाए तब मर्म प्राप्त किया कहलाता है। ऐसा कहा जाता है कि तब अर्क निकलने की शुरुआत होती है। यह ज्ञानार्क है पूरा। नौ कलमें तो तमाम शास्त्रों का अर्क हैं। इसीलिए अवश्य बोलनी चाहिए।

ये जो नौ कलमें लिखी गई हैं, ये चौदह लोकों का सार है। पूरे चौदह लोकों के दही को मथकर मक्खन निकालकर मैंने इनमें रख दिया है। हमारे महात्मा कितने पुण्यशाली! कि लिफ्ट में बैठे-बैठे मोक्ष में जा रहे हैं! शर्त सिर्फ इतनी है कि हाथ बाहर नहीं निकालना है।

ये नौ कलमें तो अन्य कहीं हो ही नहीं सकतीं, नौ कलमें तो पूर्ण पुरुष ही तो लिख सकते हैं। इनसे तो लोगों का कल्याण हो जाएगा। ये भावना करने से पूर्ण होने लगेंगे। सिर्फ यही भावना करने जैसी है।

## अभिप्राय मुक्त करवाती हैं नौ कलमें

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मैंने देखा कि अभिप्राय बदल जाते हैं, सभी। दादा का यह जो कुछ भी करते हैं, उसमें ऐसी कोई गलती दिखाई नहीं देती लेकिन

यह लोगों की समझ में क्यों नहीं आता? किसी जीव को दु:ख नहीं, किसी भी धर्म का प्रमाण आहत् नहीं करते, सभी चीज़ें इसमें हैं तो समझ में क्यों नहीं आता?

**दादाश्री :** इसे समझना आसान नहीं है न!

**प्रश्नकर्ता :** दादा, ये सारे जो वाक्य हैं उनमें एक वाक्य भी ऐसा नहीं है कि जहाँ खुद बंधन में आ जाए। खुद मुक्त होता जाता है। ऐसे ही अनुभव हुए हैं न!

**दादाश्री :** बहुत सोचने जैसा है।

**प्रश्नकर्ता :** अन्य धर्मों में, तो जैसा ेआप कहते हैं न कि साबुन होता है, कपड़े धोते हैं तब साबुन अपना मैल छोड़ता जाता है फिर टीनोपाल से धोएँ तो टीनोपाल का मैल लग जाता है, ऐसी हर एक धर्म की सब क्रियाएँ हैं, जबकि ये चरणविधि, नमस्कार विधि, नौ कलमें, ये सभी चीज़ों से मुक्त करती है।

**दादाश्री :** अरे! एकदम मुक्त।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् किसी भी जगह पर जीव को बंधन नहीं है।

**दादाश्री :** इसका शुद्ध हेतु है। विज्ञान है न, अक्रम विज्ञान! किसी भी काल में ऐसा देखा ही नहीं! सुना ही नहीं है न!

## नौ कलमों में करना नहीं है कुछ

इन कलमों में कुछ करने के लिए नहीं कहा है हमने। ऐसी कलम ढूँढ निकालो, एक भी कलम में अगर करने का शब्द आया हो तो। यह अक्रम विज्ञान के आधार पर है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसी शक्ति दीजिए, तो शक्ति दीजिए ऐसा करना है न?

**दादाश्री :** नहीं, भाई, नहीं करना है। करने का कहा है तो पता लगाओ, देखो उस वाक्य की रचना कितनी, उसमें करने का भाव ही नहीं आता न।

मृदु-ऋजु भाषा करनी नहीं है। तू ऐसी भावना कर, कहा है। कोई कठोर भाषा बोल रहा हो तो अगर उसके साथ हम मृदु-ऋजु बोलने जाएँगे तो मूर्ख बन जाएँगे। कठोर के सामने भले ही कठोर वाणी निकले लेकिन भावना ऐसी करो, कहते हैं। भावना सब से आसान चीज़ है, अहंकार का कैफ नहीं चढ़ता और उसमें तो 'करो', तो कहेगा 'करूँ' तो बन गया कर्ता।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, क्या यह बात सही है कि भाव करने से पात्रता बढ़ती है?

**दादाश्री :** सच्चा पुरुषार्थ ही भाव है। ये (क्रिया) वगैरह कुछ भी नहीं हैं, कर्तापद तो बंधन पद है और यह भाव जो है, वह तो छुड़वानेवाला पद है।

**प्रश्नकर्ता :** भाव, क्या यह छुड़वानेवाला पद है?

**दादाश्री :** हं, और कर्तापद बंधन पद है। 'ऐसा करो, वैसा करो और फलाँ-फलाँ करो,' इसीलिए लोग बंध गए न! एकदम मज़बूती से बंध गए हो न? लोग बंध गए हैं, क्या ऐसा आपने देखा नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** अभी इस काल में नौ कलमों की बहुत आवश्यकता है।

**दादाश्री :** इसलिए तो हम सभी को दे रहे हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यदि 'नौ कलमें' पढ़े तो, पढ़ते ही ऑटोमैटिक उसमें समझ आ जाती हैं, ऐसा है।

**दादाश्री :** हाँ, क्योंकि चाहे जो भी व्यक्ति हो उसे फिट हो जाए। ऐसा है।

## अड़चनें दूर होने पर शांति

जब यह 'ज्ञान' देते हैं उस दिन क्या होता है? ज्ञानाग्नि से उसके जो कर्म हैं, वे भस्मीभूत हो जाते

हैं। दो प्रकार के कर्म भस्मीभूत हो जाते हैं और एक प्रकार के कर्म बाकी रहते हैं। जो कर्म भाप रूपी हैं, उनका नाश हो जाता है और जो कर्म पानी रूपी हैं, उनका भी नाश हो जाता है लेकिन जो कर्म बर्फ रूपी हैं, उनका नाश नहीं होता। बर्फ रूपी जो कर्म हैं, उन्हें भोगना ही पड़ता है, क्योंकि वे जमे हुए हैं। कर्म फल देने के लिए तैयार हो चुका है, वह फिर छोड़ता नहीं। लेकिन पानी और भाप स्वरूप जो कर्म हैं, उन्हें ज्ञानाग्नि भस्म कर देती है। इसलिए ज्ञान पाते ही लोग एकदम हल्के हो जाते हैं, उनकी जागृति एकदम बढ़ जाती है। क्योंकि जब तक कर्म भस्मीभूत नहीं हो जाते, तब तक इंसान की जागृति बढ़ ही नहीं सकती! बर्फ रूपी कर्म तो हमें भोगने ही पड़ेंगे। और फिर उन्हें भी सरल रीति से कैसे भोगें, उसके सब रास्ते हमने बताए हैं कि, ''भाई, यह 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना, त्रिमंत्र बोलना, नौ कलमें बोलना।''

नौ कलमें बोलने से व्यवहार में आनेवाली अड़चनें और अंदर जितने दोष हैं वे खत्म हो जाएँगे, और आपकी शक्ति एकदम से बढ़ जाएगी।

ये नौ कलमें और त्रिमंत्र, सब बोलने से, फिर शांति-अशांति होगी ही नहीं अहमदाबाद में तो कई जगहों पर, लोग 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' एक घंटे के लिए बोलते हैं तब दादा वहाँ दिखते भी हैं! और फिर सब लोग आकर हम से कह भी जाते हैं। उन्हें हमेशा शांति रहती है, पूरे दिन। तो फिर इतना ही चाहिए न? अगर शांति रहेगी तो बेकार ही नए कर्म नहीं बंधेंगे। और जहाँ अपना यह ज्ञान है, वहाँ तो कुछ भी रहेगा ही नहीं न! जो हर कहीं भी आज्ञा में रहे, उसका कुछ भी कर्म नहीं रहता।

जब कर्मों का उदय एक साथ आता है न, तब दम घुटता (घबराहट होती) है, तब 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलने चाहिए। अगर एक घंटे बोलें तो एकदम से घबराहट दूर हो जाती है। मंत्र बोलने हैं, नौ कलमें बोलनी हैं। नौ कलमें कुछ ज़्यादा बोलनी हैं तो चिंता नहीं होगी। इस मार्ग पर निरंतर समाधि रहती है। आधि-व्याधि-उपाधि से मुक्त रखता है, यह अंतिम स्टेशन!

त्रिमंत्र और नौ कलमें बोलेंगे तो संसार में आनेवाली अड़चनें कम हो जाएँगी। उससे आपको कोई दुःख नहीं रहेगा और संसार भी बहुत सुंदर प्रकार से चलेगा।

### पाप भस्मीभूत होते हैं यह भावना करने से

यह जो किताब आपको दी है न, उसे पढ़ने से आपको सारे निराकरण हो जाएँगे। नौ कलमें, त्रिमंत्र, नमस्कार विधि, सीमंधर स्वामी की प्रार्थना ये सब अगर रोज़ पढ़ेंगे, तो आपके सारे कर्म और झगड़े खत्म हो जाएँगे और परिवार पर मुसीबत नहीं आएगी। अगर नौ कलमें पढ़ेंगे तो पाप भस्मीभूत हो जाएँगे, सिर्फ भावना करने से ही।

ये नौ कलमें हैं न, यह तो आश्चर्यजनक खोज है! व्यवहार के लिए तो इतना बहुत हो गया। सिर्फ इतना ही अगर हर रोज़ दो-तीन बार पढ़ें न, तो कल्याण हो जाए। सिर्फ पढ़ते रहना है, ऐसा करते-करते जब कंठस्थ हो जाती हैं न, तब भावना करता ही रहता है। बस, सिर्फ ये भावना ही करते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** हमला करनेवाले पर यदि प्रतिकार नहीं करना हो तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** कुछ भी नहीं करना है। आप जिस किसी भी भगवान को मानते हों उनका नाम लेना है। कोई भी मंत्र बोल सकते हो। ये नौ कलमें बोलने से सारा प्रतिकार खत्म हो जाएगा। इसीलिए मैंने कहा न कि कोई धमकाए तब ऐसा मानकर कि मेरे ही कर्म का उदय है आप यह रास्ता अपना लो। अगर आपको चाहिए तो इसके लिए मैं शक्ति दूँगा।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ऐसी शक्ति देंगे तो ठीक है...

**दादाश्री :** आप जो माँगो, वह तमाम शक्ति मिलेगी। कौन सी माँगनी है? कहो।

### अव्यक्त शक्ति व्यक्त हो जाती है

**प्रश्नकर्ता :** इन नौ कलमों में हम शक्तियाँ माँगते हैं कि ऐसा न किया जाए, न करवाया जाए या अनुमोदना न की जाए, तो इसका अर्थ क्या ऐसा है कि भविष्य में ऐसा नहीं हो उसके लिए हम शक्तियाँ माँग रहे हैं या फिर हमारा पिछला किया हुआ धुल जाए, उसके लिए है यह?

**दादाश्री :** वह धुल जाता है और शक्ति उत्पन्न होती है। शक्ति तो है ही, लेकिन धुल जाने से वह शक्ति व्यक्त होती है। शक्ति तो है ही लेकिन व्यक्त होनी चाहिए। इसलिए दादा भगवान की कृपा माँगते हैं, हमारा यह धुल जाए तो शक्ति व्यक्त हो जाए।

शक्ति तो संपूर्ण है ही भीतर, लेकिन अव्यक्तरूप से रही है। अधूरी क्यों रहती है? आपको अब भी यह सब (रिलेटिव का) अच्छा लगता है। फिर भी इस ज्ञान के बाद काफी कम हो गया न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** जैसे-जैसे कम होगा वैसे-वैसे शक्तियाँ व्यक्त होंगी। अव्यक्त शक्ति व्यक्त होगी।

### बोलने के पीछे जो भाव हैं उनका महत्व है

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हम ऐसे बोलें कि कभी भी नहीं करूँगा, तो फिर यह तो भविष्य की बात हो गई न कि अब दोबारा मुझ से कभी न हो।

**दादाश्री :** यह आपको नहीं देखना है। फिलहाल तो आप बोलो कि कभी भी नहीं करूँगा। और अगर मन में शंका रहे तो आप कुछ करनेवाले हो यह तय हो गया। फिलहाल बोलो, फिर जो हो चुका, वह अलग है और बोले वह भी अलग है।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, लेकिन करने की इच्छा नहीं है ऐसा भाव तो डाल रहे हैं न?

**दादाश्री :** बस (सिर्फ), इतना ही भाव रहना चाहिए, और कुछ नहीं चाहिए। किस आधार पर चल रहा है वह मुझे पता है। मुझे तो आप से इतना ही चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** नौ कलमें जो हैं वे पूरी नौ बोलनी हैं या इनमें कुछ रियायत (छूट) है?

**दादाश्री :** नहीं, एक की भी रियायत नहीं है। इन नौ कलमों में तो पूरा प्रतिक्रमण आ जाता है, यही वास्तविक प्रतिक्रमण है।

अर्थात् इन कलमों की भावना करते हैं न, तो सब साफ करके हमें जो अगला जन्म लेना है न, उसी की तैयारी कर रहे हैं। यह सब साफ करने की।

### नौ कलमें आज्ञा के तौर पर

**प्रश्नकर्ता :** दादा, नौ कलमें वगैरह भक्ति कहलाती हैं या आज्ञा?

**दादाश्री :** ये आज्ञा कहलाती हैं।

**प्रश्नकर्ता :** नौ कलमों से सुननेवाले को और बोलनेवाले को क्या फायदा मिलता है?

**दादाश्री :** पाँच आज्ञा में रहने का फायदा मिलता है।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् पाँच आज्ञा में ज़्यादा रह सकते हैं?

**दादाश्री :** दखलें कम हो जाती हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** और सुननेवाले को?

**दादाश्री :** सुननेवाले को भी इससे फायदा है। जिसकी ऐसी इच्छा है कि सभी पाँच आज्ञा में अच्छी तरह से रहें, तो इस इच्छा से उसे भी उतना फायदा मिलता है अर्थात् बहुत लाभदायी है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी उस वक्त कैसा भाव रहता है? जागृति में क्या रहता है?

**दादाश्री :** वह तो उसके खुद के (भाव) पर आधारित है।

**प्रश्नकर्ता :** कैसेट लगाएँ और सुनें तो सुननेवाले को कितना फायदा होगा?

**दादाश्री :** उतना ही होगा।

**प्रश्नकर्ता :** उतना ही होगा?

**दादाश्री :** तो और क्या होगा? बात सुनते ही अंदर उतनी अवेरनेस (जागृति) आ जाती है और आज्ञा का पालन हो जाता है।

## छूटते हैं ऋणानुबंध के तार

**प्रश्नकर्ता :** दादा, हम ये जो नौ कलमें बोलते हैं, वे परम विनय के ही भाव हैं?

**दादाश्री :** नहीं, इससे पिछला सारा, जैसे कि हर किसी को तंग किया हो, हर किसी को उल्टा बोल दिया हो, तो ऐसा सब मिट जाता है। जगत् के साथ ऋणानुबंध छोड़ने के लिए ये नौ कलमें हैं। छूटना नहीं चाहिए? ये नौ कलमें बोलने से तार छूट जाएँगे। लोगों के साथ जो तार बंधे हुए हैं वो ऋणानुबंध आपको छूटने नहीं देते। इन तारों को छोड़ने के लिए नौ कलमें हैं।

अनंत जन्मों से लोगों के साथ जो खट-पट हो चुकी हो, तो ये नौ कलमें बोलने से सब ऋणानुबंध छूट जाते हैं।

## नौ कलमें प्रतिक्रमण के तौर पर

दादा भगवान की नौ कलमें रखी गई हैं न, वे पूरे जगत् के लिए कल्याणकारी प्रतिक्रमण हैं। क्योंकि जगत् अतिक्रमण से खड़ा है। इस दुनिया में प्रतिक्रमण के सिवा दूसरा कोई साधन नहीं है। यह सर्वोच्च साधन है।

यह सब से बड़ा प्रतिक्रमण है, ज़बरदस्त प्रतिक्रमण है। उसमें सब समा गया है। ऐसी नौ कलमें कहीं नहीं निकली थीं (किसी ने नहीं बनाई)। जैसे यह ब्रह्मचर्य की पुस्तक नहीं निकली थीं, उसी तरह ये नौ कलमें भी नहीं निकली थीं। यदि ये नौ कलमें पढ़ें न, तो एक ही जन्म में मोक्ष हो जाए। और ये भावना करें न तो दुनिया में किसी के साथ बैर नहीं रहेगा, सभी के साथ मैत्री हो जाएगी।

इन नौ कलमें में सारे जगत् का प्रतिक्रमण आ जाता है। बस इतना समझने जैसा है। प्रत्याख्यान करके करो। अच्छी तरह से करो। हम तो आपको दिखा देते हैं, फिर हम हमारे देश (मोक्ष में) चले जाएँगे न!

## दोषों की निर्जरा और बैर हो खतम

**प्रश्नकर्ता :** ये नौ कलमें हैं, तो उन नौ कलमों में जैसा कहा है उसके अनुसार ही हमारी भावना है, इच्छा है, सब है, अभिप्राय से भी वही है।

**दादाश्री :** ये बोलने से आपके अभी तक जो दोष हो चुके हैं, वे सब ढीले हो जाएँगे और बाद में उसका फल तो आएगा ही। जली हुई रस्सी जैसे दोष हो जाएँगे, हाथ लगाने से वे गिर जाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** नौ कलमें पढ़ने से बहुत से सूक्ष्म दोष पकड़ में आते हैं।

**दादाश्री :** ये नौ कलमें तो सारे दोषों का खात्मा कर देती हैं, लेकिन समझ में आए तब न! इंसान अगर समझ जाए तो नौ कलमें बोलेगा। 'शक्ति दीजिए' इतना ही बोलना है हमें करना कुछ भी नहीं है। 'दीजिए', सिर्फ इतनी ही माँग करनी है।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा पहले जिन दोष पकड़ में आते थे, उनसे भी सूक्ष्म का पकड़ में आते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, पकड़ में आते हैं न। औरों के

साथ बैर बंद हो जाते हैं और सारे बैर खत्म हो जाते हैं। पूरे जगत् के साथ हुए बैर खत्म हो जाते हैं, ऐसी यह नौ कलमें हैं।

इन नौ कलमों से तो दुनिया के साथ आपने जो गुनाह किए हैं, उनमें से आधे गुनाह माफ हो जाते हैं। तभी भगवान राज़ी होंगे, वर्ना भगवान कैसे राज़ी होंगे?

## मन रहेगा संयम में

**प्रश्नकर्ता :** दादा, जब तक हम यहाँ (विदेश में) हैं, तब तक भावना तो ऐसी रहती है कि वहाँ (भारत) वापस आ जाएँ, तो आपके साथ रह कर सत्संग मिलेगा, लेकिन तब तक नियमित रूप से हम ऐसा क्या करें, ताकि बैटरी अपने आप चार्ज होती रहे।

**दादाश्री :** हाँ, दादा का निदिध्यासन, आँखें बंद करने से दादा दिखते ही रहें (उस तरह से) 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलने हैं। फिर ये नौ कलमें खूब बोलनी हैं, ये तो खूब ही बोलने योग्य हैं।

इन कलमों को पढ़ेंगे तो विचारों में काफी परिवर्तन आ जाएगा। आपका मन जिस आधार पर इधर-उधर खिंचा जाता है न, तो ये नौ कलमें बोलने से वह खिंचना बंद हो जाएगा। जितने गुनाह किए हैं वे सारे गुनाह कम हो जाएँगे। उसके बाद यह ज्ञान रहेगा ठीक से। अत: यह जितना मैंने बताया है न उतना करो तो बस हो गया।

## नौ कलमों के स्मरण से जागृति रहेगी

**प्रश्नकर्ता :** दादा, जब भरा हुआ माल निकले, तब उस समय आत्मा में ही रहने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** आपको पता चल जाता है कि यह भरा हुआ माल है। फिर आप अपने काम में ही लगे रहो तो फिर उस तरफ ध्यान ही नहीं जाएगा। अपना भरा हुआ माल जब निकले न, तब अंदर तो एक प्रकार की विधि तय की हुई होती है कि मुझे यह विधि बोलनी है, एक्ज़ेक्ट ऐसा तय रखे न, तो विधि बोलने से भरा हुआ माल खत्म हो जाता है, अपने आप।

**प्रश्नकर्ता :** यह ठीक है, जैसा आप कह रहे हैं वैसा होता है, वह परत निकल (खत्म हो) जाती है।

**दादाश्री :** हाँ, बस।

**प्रश्नकर्ता :** उस समय ज़रा भी असर नहीं होता।

**दादाश्री :** हमें जब ज्ञान हुआ न तब भरा हुआ माल निकलता था, तो ऐसी विधि सेट की हुई रहती थी। जब ऐसा भरा हुआ माल निकलने लगता तब हम विधि शुरू कर देते थे।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन भरे हुए माल का जितना वह निरंतर प्रवाह रहता है, उतनी ही जागृति भी निरंतर रहनी चाहिए न?

**दादाश्री :** अवश्य।

**प्रश्नकर्ता :** उतनी ही जागृति निरंतर रहेगी तभी वह उसका मुकाबला कर पाएगी?

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन जागृति तो चाहिए और अपने महात्माओं को है भी लेकिन भरा हुआ माल उकसाता है न, इसीलिए हार जाता है।

## कर्म के उदय के सामने सेटिंग

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी तो चाहे कितना भी बड़ा कर्म का उदय हो तब भी उसमें से समताभाव से निकल जाता है लेकिन यदि कभी वह इस तरफ संसार के अन्य कामों में लगा हुआ हो तब उस समय आत्मा का जो लक्ष्य है, वह चला जाता है। अंदर का

लक्ष्य उन कामों की तरफ चला जाता है, इसीलिए वह उस मौके का फायदा नहीं उठाता, ऐसा सब करता है।

**दादाश्री :** अब वह जो संसार की ओर जाता है...

**प्रश्नकर्ता :** भले ही वह सत्संग का काम हो लेकिन वह (लक्ष्य) उस काम की ओर रहता है।

**दादाश्री :** अगर कोई सत्संग के काम में लगा हो न, तो उस समय वे सब भाग जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन नहीं, उस समय आते हैं लेकिन यदि आत्मा की ओर झुकाव हो तो फिर नहीं आते।

**दादाश्री :** आएँगे, लेकिन अगर हम काम में लगें रहें तो वे बैठेंगे नहीं, बहुत देर तक। बैठ नहीं पाएँगे वे, राह नहीं देखेंगे, वे चले जाएँगे वापस।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, चले तो जाते हैं लेकिन फिर भी थोड़े समय के लिए तो...

**दादाश्री :** वह तो कुछ भी करके सेटिंग कर लेनी चाहिए। अब आप कुछ लिखना वगैरह ऐसी बाहर की कुछ सेटिंग कर लेते हो, जबकि हम अंदर अन्य व्यवहार सेट कर लेते हैं। यह जो किताबों में लिखा हुआ है न, नौ कलमें वगैरह, ऐसा सब हम सेट कर लेते हैं। ऐसी कितनी ही कलमें सेट की हुई हैं, वे कलमें चलती रहती हैं अंदर। इसीलिए हमारे दो-तीन घंटे तो उसी में चले जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** रोज़ दो-तीन घंटे?

**दादाश्री :** हाँ, रोज़ हमारे दो-तीन घंटे इसी में चले जाते हैं। अब उन दिनों ज़रूरत थी। उन दिनों वह सेट किया था, जब दूसरा माल निकलता था। अब तो वह नहीं निकलता लेकिन...

**प्रश्नकर्ता :** वे कौन सी कलमें थीं? वे उसके विरोधवाली कलमें होती थीं? उनसे बचाव के लिए कलमें थी? ये कलमें जो भी होंगी, वे रोज़ के उदय से बचने के लिए होती होंगी?

**दादाश्री :** नहीं। वह उसके रंग में (उदय में) रंगेगा नहीं और हमें स्पर्श नहीं करेगा वह।

**प्रश्नकर्ता :** बच जाएँगे और हम पर असर नहीं होगा।

**दादाश्री :** वह जो पूरण किया हुआ है, वह हमें जलाएगा नहीं। कपड़ा बिगाड़ देगा लेकिन दाग़ नहीं लगेगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, एक-दो उदाहरण दीजिए न ऐसी विधि के।

**दादाश्री :** ये नौ कलमें हमारी विधि का ही एक भाग है। फिर लक्ष (जागृति) रहता है और उसके बाद अंदर वह विधि करता रहता है। ये भावनाएँ होती रहती हैं।

**प्रश्नकर्ता :** भावना करते रहने से, उदय के प्रवाह का ज़ोर टूट जाता है।

**दादाश्री :** हाँ।

## *पुद्गल* के अधिपत्य के विरुद्ध उपयोग

**प्रश्नकर्ता :** जब *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) का अधिपत्य होने लगे तब क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** *पुद्गल* को तो बस, आपको देखते रहना है। अधिपत्य चाहे कैसा भी हो, आपको देखते रहना है। इसके बावजूद भी *पुद्गल* से, चंदूभाई से कहना है कि किताब में जो हैं, वे तीनों मंत्र बोलो, उसमें जो नौ कलमें हैं, वे बोलने से सारे परिणाम बदल जाएँगे। यानी कुछ भी करके उसे रास्ते पर लाते रहना है। समझदार लोगों को तो ये नौ कलमें

कंठस्थ कर लेनी चाहिए। और चलते-फिरते बोलनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** मन में ही रखनी चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, चलते-चलते चंदूभाई बोलते रहें तो रास्ता भी कट जाएगा और भावना भी हो जाएगी।

**प्रश्नकर्ता :** और फिर शक्ति भी मिलेगी।

**दादाश्री :** हाँ, ज़बरदस्त शक्ति उत्पन्न होगी!

## ये बोली जा सकती हैं कभी भी, कहीं भी

**प्रश्नकर्ता :** ये कलमें काम करते हुए या गाड़ी चलाते हुए या पूरे दिन में कभी भी ये बोली जा सकती हैं या एक ही जगह पर बैठकर बोलनी चाहिए?

**दादाश्री :** एनी टाइम (किसी भी समय) बोली जा सकती हैं। अगर मन किसी और जगह पर कूद (जा) रहा हो तब भी बोली जा सकती हैं, तो ध्यान बँट जाएगा।

जब हम ये नौ कलमें बोलते हैं न, उस समय अपना कौन सा ध्यान रहता है? धर्मध्यान रहता है या अधर्म नहीं करना है, वह।

धर्मध्यान होगा तभी यह हो सकता है। और अगर पूरा ध्यान नहीं हो तो तेज़ी से पढ़ लेते हैं, लेकिन उससे कोई फायदा नहीं होता। और यहाँ तो सब ध्यानपूर्वक बोल रहे थे न? धर्मध्यान क्या देता है? अगले जन्म की सलामती और इस जन्म की भी सलामती। ये तो डिस्चार्ज है इसीलिए इस जन्म की सलामती, क्योंकि यह धर्मध्यान डिस्चार्ज है, और उसका फल भी धर्मध्यान है इसीलिए इस जन्म में, बाद की ज़िंदगी में सलामती रहेगी।

## पूर्व के हिसाबों से छूटा जा सकता है नौ कलमों द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** ये जो नौ कलमें दी हैं, वे विचार, वाणी और वर्तन की शुद्धता के लिए ही दी हैं न?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं। अक्रम मार्ग में ऐसी शुद्धता की ज़रूरत ही नहीं है। ये नौ कलमें तो, सब के साथ, अनंत अवतार से आपके जो हिसाब बंधे हों, उन हिसाबों से छूट जाने के लिए दी हैं, बहीखाते साफ करने के लिए दी हैं।

ये नौ कलमें बोलने से, सामनेवाले के साथ का ऋणानुबंध और सारे हिसाब संपूर्णरूप से चुक नहीं जाते। गांठ रहती है, लेकिन जली हुई गांठ जैसी रहती है। फिर इतना काम नहीं करती। यहाँ अभी, उसका पूरा रस खत्म हो जाता है, ये बोलने से।

इस तरफ का झुकाव (भाव, वृत्ति) है वह बात तय है लेकिन यह झुकाव अवश्य ही इस प्रकार का होना चाहिए। झुकाव तो होगा। झुकाव तो... साधु-संन्यासियों को तंग न करने की इच्छा रहती ही है न! लेकिन वह डिज़ाइनपूर्वक होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** डिज़ाइनपूर्वक यानी कैसे दादा?

**दादाश्री :** उसमें जो लिखा है उस तरह से।

**प्रश्नकर्ता :** वैसे ही भाव रहने चाहिए?

**दादाश्री :** एक्ज़ेक्टनेस में (यर्थाथता)।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** बाकी यों तो 'साधु-संतों के लिए ऐसा रहता ही है कि इन्हें तंग नहीं करना है' लेकिन करता ही है। इसका कारण क्या है? यह कि उसका डिज़ाइनपूर्वक नहीं है। अगर डिज़ाइनपूर्वक होगा तो तंग नहीं करेगा।

## डिज़ाइन आएगी, दादा भगवान द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** तो ऐसा कह सकते हैं कि ये नौ कलमें समझदारीपूर्वक और भावपूर्वक बोलनी चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं, समझदारीपूर्वक और भावपूर्वक ऐसा कुछ भी नहीं है।

हम क्या कह रहे हैं कि हमने जो बताया है सिर्फ वह शक्ति माँगो। शक्ति आपको एक्ज़ेक्ट वैसा बना देगी। आपको समझदारीपूर्वक नहीं करना है, यह होगा भी नहीं। इंसान समझदारीपूर्वक कर ही नहीं सकता। अगर समझकर करने जाएगा तो होगा भी नहीं। कुदरत को सौंप देना है। अर्थात् 'हे दादा भगवान शक्ति दीजिए,' शक्ति अपने आप आएगी, एक्ज़ेक्ट मिलेगी।

ऐसा मैंने क्यों कहा होगा कि शक्ति माँगना? 'शक्ति दीजिए' ऐसा?

**प्रश्नकर्ता :** अब तक लोगों ने पौद्गलिक की माँग की है, भौतिक सुखों की, और अब लोग इस ओर मुड़े इसीलिए 'शक्ति माँगना' लिखा है।

**दादाश्री :** खुद डिज़ाइन नहीं बना सकता। मूल डिज़ाइन कैसे बना सकेगा? यह इफेक्ट है। यह जो शक्ति माँगते हैं, वह कॉज़ है और जो आएगा वह इफेक्ट है। वह इफेक्ट किसके मारफत आता है? दादा भगवान के मारफत। सेट किया हुआ इफेक्ट भगवान के थ्रू (द्वारा) आना चाहिए।

## शक्ति माँगो, वर्तन में बाद में आएगा

**प्रश्नकर्ता :** दादा, फिर भी नौ कलमें आचरण में रहे, ऐसी इच्छा अभी भी रहती है।

**दादाश्री :** वर्तन नहीं रखना है। नौ कलमों की शक्तियाँ माँगते रहना है। वर्तन तो अगले जन्म में आएगा।

(मेरे) कहने का भावार्थ (मतलब) यह है कि अगर यहाँ बीज बोओगे तो फिर वर्तन में आएगा और उसके बाद काम होगा। बीज ही नहीं बोओगे तो वर्तन में कैसे आएगा?

ये तो बरसात, सिर्फ पानी डलवाते रहते हैं। नहीं उगेगा, भाई! बीज ही नहीं डाला, तो उगेगा कैसे?

## भावना करो जागृतिपूर्वक

**प्रश्नकर्ता :** यानी ऐसी जो भावना हैं, यदि ऐसी भावना करें तो वह उत्तम कहलाएगा न?

**दादाश्री :** खराब भाव तो खत्म हो गए! इससे जितना हुआ उतना ठीक, उतना कमाया लेकिन जो खराब भाव था वह खत्म हो गया।

**प्रश्नकर्ता :** और कुछ नहीं करे लेकिन ऐसी उच्च भावना करता रहे तो उस भावना को मिकेनिकल भावना कह सकते हैं?

**दादाश्री :** नहीं, मिकेनिकल कैसे कहा जा सकता है? मिकेनिकल तो वह ज़रा ज़्यादा ही, खुद को पता न चले और बोलता रहे तो मिकेनिकली है। भावना करे तो बहुत हो गया।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन इस अनुसार हर रोज़ बोलें तो फिर वैसे बोलना मिकेनिकल नहीं हो जाएगा?

**दादाश्री :** वह तो रटा हुआ कहा जाएगा, रटा हुआ नहीं चलेगा। ये तो लगन से ही बोलनी चाहिए। एक-एक शब्द लगन से ही बोलना चाहिए। लेकिन इसे उपयोगपूर्वक बोलना है। रटने की चीज़ नहीं है, उपयोगपूर्वक बोलने की चीज़ है। इसमें क्या परेशानी है, उपयोगपूर्वक बोलने में? घर पर इस तरह उपयोगपूर्वक बोल सकते हैं या नहीं बोल सकते? ये (प्रात:विधि) पाँच बार बोलो, नौ कलमें बोलो, त्रिमंत्र बोलो, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार।' फिर और बोलने को बचा ही कहाँ? फिर स्पर्श नहीं करेगा न संसार! फिर भले ही संसार चारों ओर से घेर ले! यह अक्रम विज्ञान सभी प्रकार से मुक्ति दिलाए ऐसा है!

**प्रश्नकर्ता :** दादा, नौ कलमें तो रटी हुई चीज़

की तरह कभी भी बोलते रहते हैं, तो फिर इसका परिणाम क्या आएगा?

**दादाश्री :** वास्तव में तो ऐसा है न, कि शांति से बैठकर खाना खाएँ तो उससे अंदर मन को, बुद्धि को, चित्त को, सभी को संतोष हो जाता है। और चाहे कैसे भी, रास्ते पर चलते हुए, काम करता जाए और खाता जाए, तो उससे कुछ फायदा होगा? उससे संतोष नहीं होगा। हर एक कार्य में हमें संतोष मिले, इस तरह करना है। हमें क्या जल्दी है? अगर उलझा हुआ इंसान ऐसा करे तो कोई गुनाह नहीं है, लेकिन आप उलझन में नहीं हो। आपकी स्टेज अलग प्रकार की है। क्या आप उलझे हुए हो?

### परिणाम आएगा बाद में

**प्रश्नकर्ता :** हम रोज़ नौ कलमें बोलें या प्रार्थना करें तो हम अच्छा कर रहे हैं या परिणाम मिल रहा है, वह कैसे पता चलेगा?

**दादाश्री :** परिणाम तो बाद में आएगा, उसका रिज़ल्ट तो आएगा न? हम परीक्षा दें और परिणाम आए तो पता नहीं चलता कि हमने किस चीज़ की परीक्षा दी थी? रिज़ल्ट आए इसलिए।

### इन्हें बोलने से आत्मा की ओर जाते हैं

ये नौ कलमें, अंदर के लिए सही बात। इन्हें बोलेगा न, तो वह आत्मा के लिए बोलेगा। और दूसरा सब इस संसार के लिए बोलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यह आत्मा के लिए है लेकिन फिर भी ये सारी क्रियाएँ हो जाती हैं जैसे कि कहा है न कि 'किसी का अवर्णवाद नहीं करना है।'

**दादाश्री :** सवाल वह नहीं है। आप ये बोलते हो तो आप आत्मा की ओर जा ही रहे हो। क्रियाएँ भले ही हो जाएँ, क्रियाएँ करने में हर्ज नहीं है। जगत् के लोग क्या कहते हैं कि क्रियाएँ मत करना। हम क्या कहते हैं? क्रियाएँ करने में हर्ज नहीं है। ये सब बोलो। और इनमें शक्ति माँगनी है, इनके अनुसार हमें वर्तन नहीं करना है। आप क्या कहते हो? 'मुझे शक्ति दीजिए। मेरी भूलों से जो अशक्ति, निर्बलता उत्पन्न हुई है, वे भूलें आज खत्म हो जाए। विज्ञान है यह तो! संपूर्ण विज्ञान है!

### नहीं करना है प्रयत्न, वर्तन में लाने का

**प्रश्नकर्ता :** फिर भी इन्हें वर्तन में लाने की बहुत इच्छा रहती है।

**दादाश्री :** नहीं, वर्तन में नहीं लाना है। शक्ति माँगनी है, ऐसा कहा है। उसमें कोई हर्ज है? उसमें कोई अड़चन नहीं है न? पालन करने को कहें, तब हर्ज है कि अभी मैं कैसे इनका पालन कर सकूँगा? अभी व्यवसाय कर रहा हूँ, ये कर रहा हूँ, वो कर रहा हूँ।

हमने कहा है न कि नौ कलमें तुझे करने के लिए नहीं दी हैं। वर्ना दूसरे दिन से ही कमर कस लेगा और कहेगा कि ऐसा करना है। उससे फिर ये भी बिगड़ जाएगा, वो भी बिगड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। फिर भी नौ कलमों के अनुसार रहा नहीं जा सकता।

**दादाश्री :** लेकिन क्या शक्ति माँगने के लिए नहीं कहा है? शक्ति माँगनी है। वह शक्ति ही फिर वर्तन में ले आएगी। धीरे-धीरे शक्ति जमा होनी चाहिए। जबकि लोग इन्हें वर्तन में लाना चाहते हैं।

### उपयोगपूर्वक बोलनी है ये नौ कलमें

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने कहा कि नौ कलमें उपयोगपूर्वक भावना करने की चीज़ है, तो उपयोगपूर्वक भावना करना अर्थात् क्या?

**दादाश्री :** हमारी उपस्थिति में चंदू बोले और हम कहीं बाहर घूमने गए हों, तब चंदू बोले तो

इसका कोई मतलब नहीं है। वह उपयोगपूर्वक नहीं कहलाता। जागृति कहीं ओर हो और बोले तो वह उपयोगपूर्वक नहीं कहलाता। हमें ऐसा लगना चाहिए कि चंदू अच्छी तरह से बोल रहा है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, वह कैसे?

**दादाश्री :** जब तू कलमें बोलता है, तब उसका हर एक शब्द सही है या नहीं ऐसा तुझे देखना है। मानो पढ़ रहा हो वैसे बोलना है। वैसे बोलता है?

**प्रश्नकर्ता :** कभी कभार मिस हो (छूट) जाता है।

**दादाश्री :** क्या मिस हो जाता है?

**प्रश्नकर्ता :** पढ़ नहीं पाता।

**दादाश्री :** तो फिर मतलब नहीं है। पढ़ रहे हों ऐसे बोलना चाहिए। कभी कभार, एक-दो बार ऐसा हो जाता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बहुत नहीं होता।

**दादाश्री :** तो चला सकते हैं, पाँच प्रतिशत चला सकते हैं। तुझ से दो प्रतिशत हो जाता है लेकिन पाँच प्रतिशत तक चला सकते हैं। कितने प्रतिशत चला सकते हैं? ९५ प्रतिशत पढ़ें तो वह भगवान ही कहलाएगा।

लोग इसकी आराधना करते हैं, तो क्या यह आराधना कोई ऐसी-वैसी चीज़ है? महान ज्ञानियों को भी पता नहीं था कि नौ कलमें आराधना करने जैसी चीज़ है।

## भावना करो नियमपूर्वक

**प्रश्नकर्ता :** ये नौ कलमें दिन में एक बार करनी हैं?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं। तीन बार तो साधारण अच्छे इंसान के लिए कहते हैं, तो आप ज़्यादा पढ़ोगे, तो उतनी ही आपको मदद रहेगी। आपके पास ज़्यादा समय नहीं हो तो दो-तीन बार तो करना।

अभी भी हमारे नियम जारी हैं। हम कभी भी नियम नहीं चूकते। हमने किसी से लिया नहीं है, खुद ही नियम सेट किया है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने जो नियम सेट कर रखा है वह अभी भी जारी है?

**दादाश्री :** जारी है। नियम में तो रहना ही चाहिए। बुखार आए तो भी नियम में ही।

**प्रश्नकर्ता :** ये किस प्रकार के नियम हैं?

**दादाश्री :** जैसे कि आपने तय किया हो कि मुझे नौ कलमें, चरणविधि करनी हैं, ऐसे सब नियम।

कुछ भी हो आपको नियम में रहना ही चाहिए कि चाहे कुछ भी हो जाए इतना तो मुझे करना ही है। शादी हो जाए या शादी न हो, मुझे इतना तो करना ही है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, नियम और रूटीन में क्या फर्क है?

**दादाश्री :** रूटीन तो अजागृतिपूर्वक, मिकेनिकल कहलाता है। रूटीन यानी मिकेनिकल और नियम यानी जागृतिपूर्वक ।

**प्रश्नकर्ता :** नियम मिकेनिकल नहीं है?

**दादाश्री :** नियम को (मिकेलिकल) कह ही नहीं सकते, न!

**प्रश्नकर्ता :** यानी जो मिकेनिकल है वह रूटीन है और जो मिकेनिकल नहीं है वह नियम है।

**दादाश्री :** हाँ, हाँ। लेकिन अगर वह करे और

मिकेनिकल जैसा हो तो उसे भी रूटीन ही माना जाएगा। इसीलिए श्रीमद् राजचंद्र ने ऐसा कहा, *'हे प्रभु, ! हे प्रभु, ! शुं कहुं दीनानाथ दयाल, हुं तो दोष अनंत नुं भाजन छुं करुणाल,'* (अगर जल्दी-जल्दी गा ले न) तो उसे रूटीन कहते हैं और नियम में तो समझकर गाता है। दो वाक्य रूटीन जैसे हो गए हों तो खुद अंदर ध्यान रखता है कि दो वाक्य रूटीन जैसे हो गए हैं, उसे नियम कहते हैं।

### दो प्रोमिस दादा को, ये करेंगे नियम से

आपको ये कलमें बोलनी चाहिए। इसे प्रतिदिन का नियम बना लेना चाहिए। बनाया है या नहीं बनाया अब तक? कल से बना लेना, हं।

जिस दिन नौ कलमें न बोल पाएँ उस दिन, 'हे दादा भगवान! संजोगवश आज मैं नहीं कर पाया, तो माफ कर दीजिए,' कहना है। ऐसा बोलोगे न तो सब ठीक हो जाएगा। लेकिन ऐसा बोलोगे न? अर्थात् यह रोज़ हो पाएगा न?

**प्रश्नकर्ता :** ज़रूर होगा।

**दादाश्री :** तो प्रोमिस दो।

### भाव, वह बीज है; भावना, वह फल है

**प्रश्नकर्ता :** दादा, हम यह जो भावना करते हैं, तो भाव और भावना, इन दोनों में क्या अंतर है?

**दादाश्री :** वे दोनों 'चंदूभाई' में आ गए! (कि हैं) लेकिन आप सही कहते हैं, भाव और भावना में अंतर है।

**प्रश्नकर्ता :** भावना पवित्र होती है और भाव तो अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी हो सकता है।

**दादाश्री :** नहीं, भावना पवित्र होती है ऐसा नहीं है। भावना तो अपवित्र को भी लागू होती है। किसी का मकान जला देने की भावना होती है और किसी का मकान बना देने की भावना भी होती है। अर्थात् भावना का उपयोग दोनों ओर हो सकता है, लेकिन भाव वह चार्ज है और भावना डिस्चार्ज है।

हमें जो भाव होते हैं कि मुझे ऐसा करने का भाव हो रहा है, ऐसा करना है, लेकिन वह भावना है, भाव नहीं हैं। वास्तव में, तो जो चार्ज होते हैं वे भाव हैं। ये भाव मैंने बंद कर दिए हैं, ज्ञानवालों में।

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा है कि 'भावना करनी चाहिए' और दूसरी तरफ 'अपनी भाव सत्ता खत्म हो गई,' ठीक है?

**दादाश्री :** भावना करने में भाव सत्ता नहीं है। भाव सत्ता के लिए तो भावक की ज़रूरत है। भावक खत्म हो गया है, उसके बाद भाव रहा ही नहीं न उसमें?

**प्रश्नकर्ता :** 'भाव करना' यह व्यवहार में कहने के लिए है?

**दादाश्री :** वह तो व्यवहार में कहने के लिए है। भाव-भावकर्म तो, अगर भावक है तो भावकर्म होगा। वह भावक नहीं बचा यहाँ पर! सिर्फ 'भाव' शब्द बोलते हैं लेकिन कोई कहे कि, 'मुझे बैंगन अच्छे लगते हैं,' उससे क्या भावकर्म हो गया?

भाव यानी बीज कहलाता है और भावना यानी फल कहलाता है। अर्थात् यह जगत् भावकर्म से खड़ा है। हम से अगर कोई चीज़ नहीं हो पाए तो भी ऐसा भाव तो रखना ही चाहिए। अपने यहाँ वह भाव ही खत्म कर दिया है। बाहर के लोगों को भावकर्म करना चाहिए, अर्थात् शक्ति माँगनी चाहिए। जिसे जो शक्ति चाहिए वह दादा भगवान से माँगनी चाहिए।

### अपने यहाँ पर भावना डिस्चार्ज रूपी

**प्रश्नकर्ता :** बाहर जो जगत् के लोगों को अगर यह शक्ति माँगनी चाहिए, तो फिर अपने

महात्मा जो शक्ति माँगते हैं, भावना करते हैं, वह किस में आता है?

**दादाश्री :** महात्मा माँगते हैं, वह डिस्चार्ज में है। क्योंकि दो प्रकार की भावनाएँ हैं; चार्ज और डिस्चार्ज। जगत् के व्यवहार के लोगों में भी भावना है और अपने यहाँ भी भावना है। लेकिन अपना डिस्चार्ज रूप में है और उनका डिस्चार्ज एवं चार्ज दोनों हैं, लेकिन शक्ति माँगने में क्या नुकसान है?

**प्रश्नकर्ता :** बाहर के लोग नौ कलमों द्वारा शक्तियाँ माँगे तो उसे भाव कहते हैं, तो अगर महात्मा शक्ति माँगे तो उसे भाव नहीं कहा जाएगा?

**दादाश्री :** बाहर के लोगों के लिए भाव कहलाता है और अपने महात्माओं के लिए भावना। मन-वचन-काया की एकता से जो बोलते हैं वह भावना है। जबकि उनमें भाव कहलाते हैं, वह चार्ज कहलाता है और यह डिस्चार्ज कहलाता है, भाव नहीं कहलाता।

### भावना, वह एक प्रकार का निश्चय

बाहर के लोगों के लिए भावकर्म कहते हैं और यहाँ भावकर्म नहीं कहते। यह एक प्रकार का निश्चय कहलाता है। अगर आप निश्चय करोगे कि यहाँ से नडियाद जाना है, तो जा सकते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। ठीक है।

**दादाश्री :** दो-चार दिनों तक निश्चय करो कि अब मुझे नडियाद जाना है...

**प्रश्नकर्ता :** तो हो जाता है।

**दादाश्री :** (अर्थात् यह) भावना करनी है, इसका निश्चय करना है। भाव शब्द तो एक भाव तय करने के लिए वह शब्द बोलते हैं।

जैसे कि हमें अगर अमरीका जाना हो तो निश्चय करेंगे तभी जा पाएँगे, वर्ना नहीं जा सकते। किसी भी चीज़ में ढील रखेंगे तो फिर दोनों तरफ के विचार आएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् यहाँ भावना यानी निश्चय है?

**दादाश्री :** निश्चय यानी विज़ा बनवा लेना चाहिए, तभी यहाँ आ सकेंगे न!

**प्रश्नकर्ता :** तो महात्माओं को नौ कलमों के अनुसार सिर्फ भावना ही करनी है न? महात्माओं को भी नौ कलमों के अनुसार निश्चय तो करना ही है न?

**दादाश्री :** हाँ, बोलने से निश्चय अपने आप हो ही जाता है, लेकिन इनका (महात्मा) निश्चय डिस्चार्ज में है जबकि जिसने ज्ञान नहीं लिया है वह चार्जवाला कर्म बाँधता है, पुण्य कर्म बाँधता है। ऊपर से उस पुण्य कर्म का फल भी मिलता है और नौ कलमें रूपक में आती हैं। दोनों साथ में आते हैं। महात्मा इससे पुण्य कर्म नहीं बाँधते।

### निश्चय से प्राप्त होता है परिणाम

**प्रश्नकर्ता :** नौ कलमें बोलने से अगर पुण्य न बंधता तो फिर उसका फायदा क्या?

**दादाश्री :** निश्चय बढ़ता है, जिस गाँव जाने का निश्चय हो, उस गाँव तक पहुँच जाता है। यहाँ से हमें सही रोड मिल गई है, उस रोड पर हम चल रहे हैं। और 'यूरीन करने जाना है,' ऐसा विचार आता है, लेकिन फिर कुछ करता नहीं हैं। फिर से निश्चय करता है कि अब यूरीन आए तो तुरंत ही वहाँ जाना है, तो आप जा सकोगे। निश्चय नहीं करोगे तो डगमगा जाओगे। हर एक काम में निश्चय की ज़रूरत है। यह डिस्चार्ज निश्चय यानी अहंकार का निश्चय नहीं, कर्ताभाव से नहीं। जैसे रास्ते पर जा रहे हों और (विचार आए) इस बार यूरीन करना ही है, ऐसा निश्चय करोगे तो फिर यूरिनल आए तो हो जाएगा।

इसी तरह आपको कभी ऐसा विचार आ जाता है न कि भाई, अगर दो-चार दिन सत्संग में नहीं जाएँगे तो क्या हर्ज है? लेकिन वापस अंदर निश्चय करोगे तो यहाँ आ सकोगे, वर्ना ढीला पड़ जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी ठेठ तक निश्चय की ज़रूरत है।

**दादाश्री :** सभी चीज़ों में निश्चय की ही ज़रूरत है। अगर कहीं डूबनेवाली जगह हो, तो हमें उसे सिखाना नहीं पड़ता कि 'निश्चय करना।' 'अंदर तय कर लेना कि अब मुझे डूबना नहीं है' ऐसा सिखाना नहीं पड़ता, लेकिन इसमें सिखाना पड़ता है। वहाँ सिखाना पड़ता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, बिल्कुल भी नहीं। वहाँ ज़्यादा जागृत रहता है।

**दादाश्री :** छोटा बच्चा हो तो भी नहीं सिखाना पड़ता। हाथ-पैर मारकर भी डूबने से बच जाता है!

**प्रश्नकर्ता :** उसके लिए भी प्रयत्न करता है।

**दादाश्री :** वह उसका निश्चय है। वह जो निश्चय है, वह निश्चय इसमें नहीं रह पाता। हल्के कर्म का उदय हो तब निश्चय चला जाता है और जहाँ भारी कर्म आए वहाँ निश्चय वापस आ जाता है। क्या ऐसा नहीं लगता आपको?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ दादा, ठीक बात है। और इसीलिए व्यवहार में भी देखा है कि जब बहुत प्रतिकूलता आती है न, तब इंसान के अंदर से सारी शक्तियाँ बाहर आती हैं।

**दादाश्री :** आती हैं। सभी शक्तियाँ हैं ही।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। अगर उसे कोई चैलेन्ज करनेवाला मिल जाए तो अंदर से निकलती हैं और अगर नरम-नरम (ढीला-ढीला, अनुकूलता) हो तो फिर ठंडी पड़ जाती हैं।

**दादाश्री :** ठंडी पड़ेंगी। यानी यह समझने जैसा है। अन्य दिनों में पढ़ता न हो लेकिन अगर उसे लगे कि परीक्षा में पास नहीं हो पाऊँगा, तो फिर आधी रात को उठकर पढ़ने लगता है, हमें उठाना नहीं पड़ता। फिर निश्चय करता है, कि 'कैसे भी करके सुबह जल्दी उठना ही है।' यानी इन सभी में निश्चय चाहिए। निश्चय में ढीले पड़ जाते हैं, उसकी सब मुसीबत है। निश्चय में ढीले पड़ते हैं न?

## नौ कलमें डिस्चार्ज का चार्ज

**प्रश्नकर्ता :** इन नौ कलमों में जो सारी शक्तियाँ माँगते हैं, उनकी अनुभूति कैसे होगी?

**दादाश्री :** बोलते रहना है। और क्या अनुभूति करनी है? माँगते रहें न, तो शक्ति प्रकट होकर अपने आप वैसा हो जाएगा, व्यवहार में। यह करने की चीज़ नहीं है कि आप उसे लेकर बैठ जाओ, क्योंकि करना डिस्चार्ज है और यह चार्ज है।

**प्रश्नकर्ता :** शक्ति माँगना चार्ज है?

**दादाश्री :** शक्ति माँगना चार्ज है। अपने यहाँ शक्ति माँगना चार्ज, यानी डिस्चार्ज का चार्ज है अर्थात् डिस्चार्ज का चार्ज करें, तो थोड़े समय में फिर डिस्चार्ज शुरू हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** डिस्चार्ज का चार्ज? यह समझ में नहीं आया।

**दादाश्री :** यह पूरा डिस्चार्ज है। उसमें अगर खाएँ तो ही भूख मिटती है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** भोजन करना डिस्चार्ज है लेकिन खाते हैं वह डिस्चार्ज का चार्ज है और संडास जाते हैं वह डिस्चार्ज का डिस्चार्ज है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, भूख लगती है, वह डिस्चार्ज है या खाते हैं, वह डिस्चार्ज है?

**दादाश्री :** भूख लगती है, वह डिस्चार्ज है। फिर जब खाते हैं तो उसे चार्ज कहते हैं और फिर संडास जाते हैं वह डिस्चार्ज है। यानी यह डिस्चार्ज का डिस्चार्ज है, अर्थात् आपके हाथ में सत्ता नहीं है। लेकिन ऐसा करेंगे (बोलेंगे) तो थोड़े समय बाद वैसा शुरू हो जाएगा। हम तो ऐसा बोलते ही रहते हैं।

## ये भावनाएँ करके, निकाल लो काम

**प्रश्नकर्ता :** दादा, अब पता चला दादा कि इसका हमें अनुभव या अनुभूति कैसे होगी!

**दादाश्री :** फिर वही अनुभूति होती रहेगी न। फिर जब अपने आप डिस्चार्ज होने लगता है, उस समय पता चल जाता है कि अंदर कुछ आने लगा है। कुछ-कुछ उसी रूप होता जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** जागृति बढ़े तो उसे अनुभूति कहते हैं?

**दादाश्री :** हाँ। जागृति बढ़ती है, सबकुछ बढ़ता है और फिर अनुभव में आता जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हमें 'निश्चय करना है,' ऐसा कहते हैं।

**दादाश्री :** नहीं करेंगे तो उसका फल कम मिलेगा। उसे फल मिले इसीलिए कहते हैं कि, भाई, अमरीका आया है तो 'इतना-इतना कर लेना न।' नहीं करेगा तो फिर से करना पड़ेगा। यह तो अपनी ग़रज़ से करना है न!

**प्रश्नकर्ता :** यह सब तो ठीक है। करना ही चाहिए लेकिन आपने...

**दादाश्री :** नहीं होगा तो फिर से करना पड़ेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** करना तो पड़ेगा ही।

**दादाश्री :** हं, और कोई चारा नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है, सच्ची भावना से शक्ति माँगनी है।

**दादाश्री :** यह बहुत उच्च चीज़ है। जब तक समझ में नहीं आएगा, तब तक यह सब यों ही है। तिलपट्टी जैसा लगता है। लोगों ने तिलपट्टी खाई है न?

## कितनी अधिक कीमत है इन नौ कलमों की!

ये नौ कलमें अगर सब लोग पढ़ेंगे न, तो बहुत कल्याणकारी हैं। नौ कलमें, इतनी कलमें पढ़ेंगे न, इतना करें तो बहुत हो गया। फिर अगर मेरे से ज्ञान लेने नहीं आएँगे तो भी चलेगा। सिर्फ इसी का पुरुषार्थ करेंगे तो, पूरा मोक्ष मार्ग खुल जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, नौ में से अगर एक को भी पकड़ें न तो उसके पीछे अन्य आठ बरतती ही हैं।

**दादाश्री :** नहीं, सभी पकड़नी पड़ेंगी। क्योंकि अंदर बुद्धि है न, बुद्धि दखल करती है इसीलिए सभी पकड़नी पड़ेंगी। सब आ जानी चाहिए। हाँ, इन नौ कलमों में सारी चीज़ें समा जाती हैं, कोई चीज़ बाकी नहीं रहती।

## इन्हें बोलने से टूटे विरोधी भाव

ये नौ कलमें बोलते हो या नहीं बोलते?

**प्रश्नकर्ता :** बोलने के बजाय अगर उनका मनन करें, तो ज़्यादा अच्छा है न?

**दादाश्री :** और क्या मनन करना है? इन्हें अगर भावनापूर्वक बोलेंगे न तो बहुत हो गया। इनका मनन करने की ज़रूरत नहीं है। मनन करने बैठे कि आत्मा हूँ, आत्मा हूँ वह करना है? आत्मा का करते रहना है या मनन का करने बैठना है? इन्हें तो बोलना है, हमें चंदूभाई से कहना है कि 'बोलना'। इससे विरोधी भाव टूट जाएँगे। बोलने से अभिप्राय बदल गया।

## ये बोलने से करार मुक्त हो जाएँगे

अपना ये, 'अक्रम विज्ञान' है! पिछली आदतें पड़ी हुई हैं, इस वजह से लुब्ध हो जाता है, इसीलिए शक्ति माँगो फिर लुब्ध हो जाए ऐसा भोजन लेने में हर्ज नहीं है। लेकिन ऐसा बोलने से करार मुक्त हो जाते हैं। समरसी खुराक लेने की आपकी जो भावना हुई, वह आपका पुरुषार्थ और मैं शक्ति देता हूँ तो उससे पुरुषार्थ मज़बूत होता है। समरसी यानी सबकुछ एक्सेप्टेड (स्वीकार्य)। कम-ज़्यादा प्रमाण में लेकिन सब एक्सेप्टेड।

प्रकृति यानी पहले जो भाव किए हुए हैं, वे किस आधार पर? कि अन्य जो भोजन खाया उस आधार पर भाव किए हैं। उस भाव को तूने तेरह से गुणा किया। अब उस भाव को खत्म कर देना हो तो तेरह से भाग लगाने से तो खत्म हो जाएगा। और नए सिरे से भाव उत्पन्न नहीं होने दें तो वह डिपार्टमेन्ट बंद हो गया। नई इच्छाएँ नहीं रहीं इसीलिए बहीखाता बंद हो जाएगा। बहीखाते को सील कर देना चाहिए।

## कलमों से लग सकता है गुणाँक में भाग

ये गुणा-भागा क्यों सिखाए जाते हैं? कि अगर गुणा की रकम बहुत बढ़ जाए तो उसी रकम से भाग लगा देना तब शेष कुछ नहीं बचेगा। अगर गुणा की रकम बढ़ जाए और उसका बोझ लगने लगे तो उसमें उतनी ही रकम से भाग लगाओगे तो बोझ कम हो जाएगा। और जोड़-बाकी तो नैचुरल है। उसमें किसी का कुछ नहीं चल सकता। इस जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, उसमें नुकसान हो रहा हो या फायदा, वह नेचर के हाथ में है और गुणा-भागा को लादकर घूमता रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** हमारी जो प्रकृति है, उसे यदि गुणा करेंगे तो वह बढ़ जाएगी। उसमें भाग लगाना चाहिए। प्रकृति का प्रकृति से भाग लगाना चाहिए, इसे ज़रा समझाइए।

**दादाश्री :** इसलिए ये कलमें बार-बार बोलने से भाग होता रहेगा और कम होता जाएगा। ये कलमें नहीं बोलेंगे तो (प्रकृति रूपी) पौधा अपने आप पनपता रहेगा। इसे बार-बार बोलने से कम हो जाएगा। इसे बोलते रहने से प्रकृति का जो गुणा हो गया है, वह टूट जाएगा और आत्मा का गुणा (बढ़ौतरी) होगा और प्रकृति में भाग लगेगा। इसलिए आत्मा की पुष्टि होगी। फुरसत मिलते ही ये नौ कलमें रात-दिन बोलते रहना! अगर समय मिले तो। हम तो सभी दवाइयाँ दे देते हैं, सबकुछ समझा देते हैं, फिर आपको जो करना हो सो करना...

## अमूल्य पूँजी समर्पित की जग कल्याण के लिए

**प्रश्नकर्ता :** ये सारी विधियाँ और नौ कलमें बहुत असरवाली हैं!

**दादाश्री :** ये तो हमारा ही आपको दिया है। लोगों ने पूछा कि आप क्या करते हैं? इसीलिए बता दिया, फुरसत मिलते ही उसे और क्या करना है?

इस काल के हिसाब से लोगों में इतनी शक्ति नहीं है। जितनी शक्ति है उतना ही दिया है। ये नौ कलमें हम आजीवन पालन करते आए हैं, उसकी यह पूँजी है। अर्थात् यह हमारा रोज़मर्रा का माल है जो बता दिया है, अंततः लोगों का कल्याण हो इसलिए। कई सालों से, चालीस-चालीस सालों से निरंतर ये नौ कलमें प्रतिदिन हमारे भीतर चलती ही रहती हैं। वही मैंने लोगों के लिए दिया हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यह सब पढ़ा तब मालूम हुआ, यह तो ज़बरदस्त बात है। छोटा आदमी भी अगर समझ जाए तो उसकी सारी ज़िंदगी सुखमय जाए।

**दादाश्री :** हाँ, बाकी समझने जैसी बात ही आज तक उसे नहीं मिली। यह पहली बार स्पष्ट समझने जैसी बात मिल रही है। अब यह प्राप्त हो जाए तो निबेड़ा आ जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** जो उल्टा व्यवहार हो जाता है उसका कारण बदल ने के लिए यह सब से बड़ा उपाय है।

**दादाश्री :** बड़ा पुरुषार्थ, ज़बरदस्त। इसीलिए यह सब से बड़ी चीज़ हमने बता दी, लेकिन अब लोगों को समझ में आना चाहिए न! इसीलिए फिर हमने अनिवार्य कर दिया कि इतना तो आपको करना ही है। भले ही समझ में न आए लेकिन पी जा न, कहते हैं। अपने आप शरीर अच्छा रहेगा। भले ही खाँसी हो गई लेकिन तेरा शरीर तो अच्छा रहेगा ही।

**प्रश्नकर्ता :** अंदर के सारे रोग खत्म हो जाते हैं, संसार रोग खत्म हो जाते हैं।

**दादाश्री :** खत्म हो जाते हैं।

पूरे संसार के सार के रूप में लिखा है। यह सब ऐसा है कि मैंने बच्चे के हाथ में रत्न दे दिया है। अगर किसी समझदार के हाथ में गया होता तो उछलने लगता... उछलते-उछलते पढ़ता कि मेरे धन्यभाग्य!

ये नौ कलमें क्या हैं। ये शास्त्रों की नहीं हैं। हम जिनका पालन करते हैं बल्कि हमेशा के लिए हमारे अमल में ही हैं, वही आपको करने के लिए दे रहे हैं, शक्ति माँगने के लिए। इसके अनुसार हमारा वर्तन होता है। हाँ, ये नौ कलमों, पहले निरंतर हम इनमें रहे हैं, उसके बाद मुझे ज्ञान हुआ। बाद में अपने महात्माओं ने कहा कि 'आपका कुछ दीजिए न!' तब मैंने कहा, 'मैं इसमें रहता था, तभी तो मुझमें यह ज्ञान प्रकट हुआ है,' इसीलिए फिर यह बात निकली है।

## जगत् के कल्याण के लिए यह नई फाउन्डेशन

सभी को ये पुस्तकें पढ़वानी हैं। और नौ कलमें सिखानी चाहिए। सभी धर्मवाले कहेंगे 'नौ कलमें सिखाइए।' सभी धर्मवाले कहेंगे कि 'बिल्कुल सही बात है।'

इन पुस्तकों को पढ़कर फिर वे लोग अपने आप हज़ार-हज़ार पुस्तकें छपवाकर बाँट देंगे। इसीलिए ये तो पुस्तकें बहुत छपवाते रहे हैं। लगभग दो-चार-पाँच हज़ार छप चुकी हैं और आगे भी छपती रहेंगी। लोगों को देते ही रहते हैं। पढ़ने जैसी है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, है।

**दादाश्री :** अर्थात् यह सब जो है, फिर से कन्स्ट्रक्शन करना है। सारी दीवारें, फाउन्डेशन निकालकर वापस कन्स्ट्रक्शन करने के लिए ही यह सब मटीरियल आ रहे हैं। ईंटें, चूना और रेत डाली हैं, उन्हें निकालकर आर.सी.सी के नए फाउन्डेशन बनेंगे।

**- जय सच्चिदानंद**

---

**'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना**

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

---

**त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज :** (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
**अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830006376
**यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232),**यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

## सारे दु:खो का मूल 'खुद' ही!

सामनेवाले का दोष किसी जगह हैं ही नहीं, सामनेवाले का क्या दोष! वे तो यही मानकर बैठे हैं, कि यह संसार, यही सुख है और यही बात सच्ची है। हम ऐसा मनवाने जाएँ कि आपकी मान्यता गलत है, तो वह अपनी ही भूल है। लोगों को दूसरों के दोष ही देखने की आदत पड़ी है। किसीके दोष होते ही नहीं हैं। बाहर तो आपको दाल-चावल, सब्ज़ी-रोटी सब बनाकर, रस-रोटी बनाकर देते हैं सभी, परोसते हैं, ऊपर से घी भी रख जाते हैं, गेहूँ बीनते हैं, आपको पता भी नहीं चलता। गेहूँ बीनकर पिसवाते हैं। यदि कभी बाहरवाले कोई दु:ख देते हों तो गेहूँ किसलिए बीनेंगे? इसलिए बाहर कोई दु:ख देते नहीं हैं। दु:ख आपका, अंदर से ही आता है।

सामनेवाले का दोष ही नहीं देखें, दोष देखने से तो संसार बिगड़ जाता है। खुद के ही दोष देखते रहना है। अपने ही कर्मों के उदय का फल है यह। इसलिए कुछ कहने को ही नहीं रहा न! ये तो सभी अन्योन्य दोष देते हैं कि आप ऐसे हो, आप वैसे हो, और साथ में टेबल पर बैठकर खाते हैं। ऐसे अंदर बैर बँधता है। इस बैर से दुनिया खड़ी रही है। इसलिए तो हमने कहा कि 'समभाव से *निकाल* करना।' उससे बैर बंद होते हैं।

## नहीं देखना दोष किसीके

**प्रश्नकर्ता :** मुझे सामनेवाले मनुष्य के गुण के बजाय दोष अधिक दिखते हैं, उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** सारे जगत् के लोगों को अभी ऐसा हो गया है। दृष्टि ही बिगड़ गई है। उनके गुण देखते नहीं, दोष खोज निकालते हैं तुरन्त! और दोष मिल भी जाते हैं, और खुद के दोष मिलते नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाले के दोष दिखते हैं, वे दोष खुद में होते हैं?

**दादाश्री :** ऐसा कोई नियम नहीं है, फिर भी ऐसे दोष होते हैं। यह बुद्धि क्या करती है? खुद के दोष ढँकती रहती है और दूसरों के देखती है। यह तो उलटे मनुष्य का काम है। जिसकी भूलें मिट गई हों, वह दूसरों की भूलें नहीं देखता है। वह कुटेव ही नहीं होती। सहज में निर्दोष ही देखता है। ज्ञान ऐसा हो कि ज़रा सी भी भूल नहीं देखे।

**प्रश्नकर्ता :** दूसरों की भूल ही मनुष्य खोजता है न?

**दादाश्री :** भूल किसीकी देखनी नहीं चाहिए। किसीकी भूल देखोगे, वह भयंकर गुनाह है। तू क्या न्यायाधीश है? तुझे क्या समझ में आता है कि तू भूल देखता है। बड़े भूल देखनेवाले आए? भूल देखता है, तो फिर तू बिना भान का है। बेभान है। भूल होती होगी? दूसरों की भूल देखी जाती होगी? भूल देखना, वह गुनाह है, भयंकर गुनाह है। भूल तो अपनी ही दिखती नहीं। दूसरों की किसलिए खोजते हो? भूल तुम्हारी खुद की देखनी है, दूसरे किसीकी देखनी नहीं है।

और ऐसे यदि भूलें देखने में आएँ तो, यह उसकी भूल देखे, वह उसकी भूल देखे, फिर क्या हो? किसीकी भूल ही नहीं देखनी चाहिए। है भी नहीं भूल। जो भूल निकालता है, वह बिलकुल नालायक होता है। सामनेवाले की थोड़ी भी भूल होती है, ऐसा मैंने ज़रा भी देखा तो वह मुझमें नालायकी होती है। उसके पीछे खराब आशय होते हैं। हाँ, भूल कहाँ से लाए? अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करते हैं। उसमें भूल कहाँ से आई?

## दादावाणी

यह न्यायाधीश का डिपार्टमेन्ट है? सब-सबकी प्रकृति के अनुसार काम करते हैं। मैं भी मेरी प्रकृति के अनुसार काम करता रहता हूँ, प्रकृति तो होती ही है न!

**प्रश्नकर्ता :** यही भूल जाते हैं कि यह सामनेवाला मनुष्य कर्त्ता नहीं है।

**दादाश्री :** हाँ, ऐसी उसकी जागृति रहे तो कोई हर्ज नहीं। सामनेवाले की भूल देखी, वहाँ से ही नया संसार खड़ा हुआ। इसलिए जब तक वह भूल मिटे नहीं, तब तक उसका निबेड़ा आता नहीं है। मनुष्य उलझा हुआ रहता है।

हमें तो क्षणभर के लिए भी किसीकी भूल दिखी नहीं है और दिखाई दे, तो हम उसके मुँह पर कह देते हैं। ढँकते नहीं कि भाई, ऐसी भूल हमें दिखती है। तुझे ज़रूरत हो, तो स्वीकार लेना, नहीं तो एक ओर रख देना।

**प्रश्नकर्ता :** वह तो उसके कल्याण के लिए ऐसा कहते हैं।

**दादाश्री :** वैसा कहते हैं सावधान करने के लिए तो हल निकले न! और फिर वह न माने तब भी हमें बिलकुल हर्ज नहीं है। हम कहें, यह करना, और नहीं माने तो कुछ नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** आपको कुछ भी नहीं?

**दादाश्री :** मैं जानता हूँ कि वह किस आधार पर बोलता है! उदयकर्म के आधार पर बोलता है। कोई थोड़े ही मेरी आज्ञा रोकने की इच्छा है? इच्छा ही नहीं होती न? इसलिए उसे गुनाह नहीं लगता है। यह उदयकर्म के आधार पर बोलता है तो उसे मोड़ना पड़ता है हमें। यदि प्रकृति बिफर जाए, वहाँ हमें परहेज कर देना पड़ता है। खुद का अहित तो संपूर्ण करता है, अन्य सभी का भी कर डालता है। बाकी, सरल प्रकृति भूलें करती है, करती ही रहती है। वह तो दुनिया में सब प्रकृतियाँ ही हैं!!

तुझे तेरी भूलें पूरी-पूरी दिखती हैं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, भूलें तो दिखती हैं।

**दादाश्री :** एक भी भूल दिखती नहीं तुझे और जितने बाल हैं, उनसे भी ज्यादा भूलें हैं। वह कैसे समझ में आए तुझे?!

**प्रश्नकर्ता :** वह भूल खानी या नहीं खानी, वह कर्माधीन है न?

**दादाश्री :** ओहोहो! यह अच्छी खोज करी। देखो न, बच्चे ही हैं न? सभी इतने-इतने बच्चे! बेभानपना!! देखो न, अभी भी भूल खानी या नहीं खानी, वह कर्माधीन है या क्या, अभी तो ऐसा बोलता है!! कुँए में तो गिरता नहीं। वहाँ सँभलकर चलता है। समय आए तो दौड़ता है, वहाँ क्यों कर्माधीनपन बोलता नहीं है? ट्रेन आए उस घड़ी पटरियाँ लाँघ जाता है या नहीं? वहाँ क्यों कर्माधीन कहता नहीं है?

खुद के दोष खुद को किस तरह दिखें? दिखेंगे ही नहीं न! क्योंकि जहाँ मोह का साम्राज्य हो, मोह से भरे हुए! मैं फलाँ हूँ, मैं ऐसा हूँ, उसका मोह वापिस! खुद के पद का मोह होता है न? नहीं होता?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत होता है।

**दादाश्री :** यही है। दूसरा कुछ नहीं है। निंदा करने जैसा नहीं है, पर सब जगह ऐसा ही है।

*(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)*

## दादावाणी

### दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**१-९ अगस्त:** अमरीका में गुरुपूर्णिमा महोत्सव के बाद महात्माओं के लिए पूज्य श्री के साथ अलास्का टूर का आयोजन हुआ, जहाँ विश्वभर में से ५४० महात्मा आए थे। महात्माओं को अलास्का रिसोर्ट (एन्करेज) में ठहराया गया था कि जो पर्वतों के बीच एक नयनरम्य स्थल है। टूर की शुरुआत वाइल्ड लाइफ कन्ज़र्वेशन सेन्टर से हुई, जहाँ कई हिंसक प्राणी देखने मिले। बाद में व्हीटीयर नामक छोटे गाँव से चार घंटें के क्रूज़ के दौरान २६ मेजेस्टिक ग्लेशियर को देखने का मौका मिला। तीसरे दिन महात्माओं ने हेलिकॉप्टर राइड, माउन्टेन हाइकिंग, एरियल ट्राम राइड का आनंद उठाया और पूज्य श्री के संग माउन्टेन टॉप रेस्टारन्ट में भोजन किया। शाम को रिसोर्ट के नज़दीक एक तालाब के पास पूज्य श्री द्वारा हल्के-फुल्के सत्संग से महात्मा हल्के फूल हो गए। चौथे दिन सी-वर्ल्ड नामक शहर से क्रूज़ था, जहाँ महात्माओं ने जलचर प्राणियों की दुनिया देखी। कुछ जलचर प्राणी जैसे आनंदित होकर पूज्य श्री से मिलने आए हों, ऐसे आश्चर्यजनक दृश्य सभी ने देखे। पाँचवे दिन काँच के डोमवाली ट्रेन में डेनाली नामक स्थल पर गए। उस दौरान अलास्का का कुदरती सौंदर्य, पहाड़ और तालाब, खास तौर पर महात्माओं को पूज्य श्री के संग अलास्का के हिमालय, बरफ से आच्छादित 'माउन्ट मकेनली' पर्वत को देखने का मौका मिला। क्योंकि ठंडा वातावरण और गाढ़ बादलों की वजह से बहुत कम लोगों को दूर से उसे देखने का मौका मिलता है। महात्माओं ने ट्रेन के सफर के दौरान पूज्य श्री के दर्शन किए और साथ में भोजन, भक्ति, गरबा वगैरह का आनंद भी उठाया। छठे दिन डेनाली नेशनल पार्क का टूर था, जहाँ सभी को भालू, गरुड़, केरीबु हिरन, जैसे प्राणियों को देखने का मौका मिला। कुछ महात्माओं ने ठंडे पानी में राफटिंग भी की और कुछ महात्माओं ने ग्लेशियर देखने के लिए हेलिकॉप्टर राइड और पर्वतारोहण किया। अंत में पूज्य श्री के दर्शन और आशीर्वाद पाकर सभी महात्माओं ने अपने-अपने घर वापस जाने के लिए विदाई ली। टूर के दौरान विश्वभर से आए महात्माओं का आपस में परिचय होने से सभी के बीच अभेदता बढ़ी और पूज्य श्री के साथ यात्रा का लाभ मिलने से आनंद की अनुभूति हुई।

**१० अगस्त :** सुबह पूज्य श्री का अमरिका से सीमंधर सिटी में आगमन हुआ।

**२२-२३ अगस्त :** अडालज त्रिमंदिर संकुल में आयोजित सत्संग ज्ञानविधि में २००० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

**२५-२७ अगस्त:** जयपुर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में ५२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री ने जयपुर स्थित मूर्ति वर्कशॉप देखने के बाद श्री सीमंधर स्वामी भगवान और त्रिमंदिर में स्थापित होनेवाले भगवंतों की मूर्तियों का बारीकी से निरीक्षण किया। सेवार्थियों के लिए आयोजित सत्संग में पूज्य श्री के दर्शन से सभी महात्माओं ने धन्यता का अनुभव किया। आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग भी आयोजित हुआ।

**२८-३० अगस्त:** महाराष्ट्र के नागपुर शहर में पहली बार पूज्य श्री के सानिध्य में सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। दो दिन के सत्संग के दौरान स्थानीय और आसपास के शहर और गाँव से आए मुमुक्षुओं ने प्रश्न पूछकर अपनी ज्ञानपिपासा तृप्त की। सेवार्थी सत्संग के दौरान लगभग सौ स्थानीय महात्माओं ने पूज्य श्री के सत्संग और दर्शन का लाभ लिया। ज्ञानविधि में ८२० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि के बाद आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में लगभग १५० नए ज्ञान लिए महात्मा आए थे।

**२९ अगस्त:** अडालज त्रिमंदिर में रक्षाबंधन के अवसर पर महात्माओं ने सामूहिक रूप से मंदिर में विधि-आरती की। आप्तपुत्र-आप्तपुत्रियों ने सभी भगवंतों को राखी बाँधी। पूज्य श्री ने फोन पर विशेष संदेश देकर विधि करवाई थी।

**३१ अगस्त से २ सितम्बर :** साल २०१० के बाद पाँच साल के बाद पूज्य श्री का अमरावती शहर में पुन: आगमन हुआ। पहले दिन इन्फॉर्मल सेशन दौरान 'दादा-दरबार' की तरह हर एक महात्मा को पूज्य श्री से व्यक्तिगत बातचीत, उनके दर्शन और भोजन प्रसाद लेने का अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। सत्संग -१४०० से ज़्यादा लोगों ने ज्ञानविधि में भाग लिया। और १०२० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में लगभग २०० महात्माओं ने आप्तपुत्र से खुद के प्रश्नों के समाधान पाया। फॉलोअप सत्संग में भी लगभग २७५ नए ज्ञान लिए महात्मा आए थे।

**५ सितम्बर :** इस साल जन्माष्टमी त्योहार अडालज त्रिमंदिर के जायजेन्टिक हॉल में मनाया गया। रात्रि १०-१२ बजे के बीच भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति दर्शन के लिए रखी गई थी। LMHT के बच्चों ने बाल कन्हैया के वेश में रास-नृत्य किया। विविध गायक कलाकारों और पूज्य श्री ने भक्तिपद गाए। रात १२ बजे पूज्य श्री ने मटकी फोड़कर श्री कृष्ण जन्मोत्सव को मनाया। बाद में पूज्य श्री ने श्री कृष्ण भगवान का पूजन और आरती की। मूर्ति एक रिवॉल्विंग स्टेज पर रखी गई थी ताकि चारों ओर से सभी को दर्शन हो सके। अंत में भक्तजनों के लिए मक्खन और मिश्री का प्रसाद दिया गया। सभी त्रिमंदिरों में स्थानीय महात्माओं ने उल्लासपूर्वक जन्माष्टमी का उत्सव मनाया।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

**रतलाम** **दि** : 23 अक्तूबर **समय** : दोपहर 2 से 4 **संपर्क** : 9907252212
**स्थल** : साँई बाबा का मंदिर, शास्त्री नगर.

**उज्जैन** **दि** : 24 अक्तूबर **समय** : शाम 6 से 8 **संपर्क** : 9630878791
**स्थल** : भारतीय ज्ञानपीठ स्कूल, माधव स्टेशन के पास, लोकमान्य तिलक स्कूल के सामने, उज्जैन.

**इन्दौर** **दि** : 25 अक्तूबर **समय** : दोपहर 3 से 5 **संपर्क** : 9302354078
**स्थल** : माँ कनकेश्वरी देवी संस्कार केन्द्र, रेडीमेड कोम्प्लेक्स के पास, परदेसीपुरा, इन्दौर.

**अमरावती** **दि** : 24 अक्तूबर **समय** : शाम 5-30 से 8 **संपर्क** : 9422335982
**स्थल** : टाउन होल, नेहरु मैदान, राजकमल चौक, अमरावती.

**नागपुर** **दि** : 25 अक्तूबर **समय** : शाम 5 से 7 **संपर्क** : 9970059233
**स्थल** : श्री नागपुर कच्छी विशा ओशवाल समाज, 57/58, अनाथ विद्यार्थी गृह लेआउट, लकडगंज, नागपुर.

**जलगाँव** **दि** : 24 अक्तूबर **समय** : शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क** : 9420942944
**स्थल** : ओमकार होल, DSP चौक, HDFC बैंक के पास, महाबल रोड, जलगाँव.

**औरंगाबाद** **दि** : 25 अक्तूबर **समय** : शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क** : 8308008897
**स्थल** : प्लोट नं. 74, N-3 CIDCO हाइकोर्ट के पास, जालना रोड, औरंगाबाद.

**औरंगाबाद** **दि** : 26 अक्तूबर **समय** : शाम 5-30 से 7-30 **( सत्संग सेन्टर पर )** **संपर्क** : 8308008897

**अहमदनगर** **दि** : 27 अक्तूबर **समय** : शाम 5 से 7 **संपर्क** : 9421836256
**स्थल** : पटेल मंगल कार्यालय, होटेल राज पेलेस के पास, तिलक रोड, अहमदनगर.

**सोलापुर** **दि** : 29 अक्तूबर **समय** : शाम 4 से 6-30 **संपर्क** : 9765081869
**स्थल** : कन्हैयालाल ब्रधर्स के उपरवाला होल, दत्ता चौक, सोलापुर.

**सतारा** **दि** : 30 अक्तूबर **समय** : दोपहर 3 से 6 **संपर्क** : 7058503230
**स्थल** : महिला मंडल शाला, 269-भवानी पेठ, राजवाडा, गांधी मैदान के सामने, सतारा.

**नासिक** **दि** : 31 अक्तूबर **समय** : शाम 6 से 8-30 **स्थल** : की जानकारी के लिए **संपर्क** : 9420000416

**भिलाई** **दि** : 26 अक्तूबर **समय** : शाम 5 से 7 **( सत्संग सेन्टर पर )** **संपर्क** : 9827481336

**भिलाई** **दि** : 27 अक्तूबर **समय** : शाम 6 से 8 **संपर्क** : 9827481336
**स्थल** : गायत्री शक्तिपीठ, रामनगर सुपेला, भिलाई.

**रायपुर** **दि** : 28 अक्तूबर **समय** : शाम 6 से 8 **( सत्संग सेन्टर पर )** **संपर्क** : 9329644433

**रायपुर** **दि** : 29 अक्तूबर **समय** : शाम 5 से 8 **संपर्क** : 9329644433
**स्थल** : खाटू श्याम मंदिर, समता कोलोनी, रायपुर.

**नांदेड** **दि** : 23 अक्तूबर, **समय** : शाम 5 से 8, **स्थल** : कुसुम सभागृह, VIP रोड, नांदेड. **संपर्क** : 8806665557

**हैदराबाद** **दि** : 24 अक्तूबर **समय** : शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क** : 9989877786
**स्थल** : कच्छी भवन, इडन बाग, रामकोट, हैदराबाद.

**हैदराबाद** **दि** : 25 अक्तूबर **समय** : शाम 4 से 6 **संपर्क** : 9908172297
**स्थल** : घर नं. 5-61, वी. वी. नगर, स्ट्रीट नं. 8/24, हबसीगुडा, हैदराबाद.

**विशाखापट्टनम** **दि** : 26 अक्तूबर **समय** : शाम 7 से 9 **संपर्क** : 9849140128
**स्थल** : D-No. 12-1-1/1 न्यु प्रकाश राओ पेटा, ग्राउन्ड फ्लोर, सींग होस्टेल जंक्शन, CMR हाइस्कूल.

**विजयवाडा** **दि** : 27 अक्तूबर **समय** : शाम 7 से 9 **संपर्क** : 9848191080, 9848669988
**स्थल** : गुजराती समाज स्कूल, आर. आर. अप्पा राओ. स्ट्रीट, विजयवाडा.

**हैदराबाद** **दि** : 28 अक्तूबर **समय** : शाम 4 से 6 **संपर्क** : 9885389204
**स्थल** : उमिया भवन, स्ट्रीट नं-2, लक्ष्मीनगर कोलोनी, कोठापेट, हैदराबाद.

## परम पूज्य दादा भगवान का 108वाँ जन्मजयंती महोत्सव - पूणे शहर में

दि. **24 नवम्बर** (मंगल), शाम 5-30 बजे - **स्वागत समारोह**, शाम 7-20 से 8-30 - **सत्संग**

दि. **25 नवम्बर** (बुध), सुबह 8 से 1, शाम 4-30 से 7 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

दि. **26 नवम्बर** (गुरु), सुबह 10 से 12-30, शाम 6 से 8-30 - **सत्संग**

दि. **27 नवम्बर** (शुक्र), सुबह 10 से 12-30 - **सेवार्थी सत्संग** तथा शाम 6 से 8-30 - **सत्संग**

दि. **28 नवम्बर** (शनि), सुबह 10 से 12-30 - **सत्संग** तथा शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

दि. **29 नवम्बर** (रवि), सुबह 10 से 12-30, शाम 6 से 8-30 - **सत्संग**

**स्थल :** मुलिक पेलेस ग्राउन्ड, कल्याणीनगर, द बीशोप स्कूल के सामने, पूणे. **संपर्क :** 7218473468

**सूचना :** 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 2 नवम्बर 2015 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम हिन्दी में होंगे। 3) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं ।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

**विशेष सूचना** - महोत्सव स्थल रेल्वे स्टेशन से 5 की.मी. के अंतर पर है. (स्थल पर पहुँचने के लिए ओटो-रिक्षा का किराया 70-80 रु है। ) - सभी महात्माओं और सेवार्थियों का रजिस्ट्रेशन आवास स्थल पर ही होगा. इस लिए सभी महात्माओं को सीधे आवास स्थल पहुँचने की नम्र विनंती है. **आवास का पता :** कुमार सेरेब्रम और सैबेज आई.टी. कंपनी के पास वाला मैदान, गोल्ड एडलेब चोक के पास, कल्याणी नगर, पुणे. (आवास स्थल पुणे स्टेशन से 5.5 कि.मी. के अंतर पर है तथा महोत्सव स्थल से 1 कि.मी के अंतर पर है।)

## पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा रविवार शाम 5-30 से 5 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** सोम-बुध-गुरु शाम 4 से 4-30 तथा मंगलवार शाम 4-30 से 5 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 10 से 10-30, दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

**USA**
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

## पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**
- **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर सोमवार से शुक्रवार सुबह 8-30 से 9 ( समय-वार में परिवर्तन )**
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शुक्र दोपहर 3-30 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)

**USA**
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 11 से 11-30 EST
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

**UK**
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

**Singapore**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

**Australia**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

**New Zealand**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

**USA-UK-Africa-Aus.** - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (गुजराती में)

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

### दुबई

दि. **4-5 नवम्बर** (बुध-गुरु), शाम 7 से 9-30 - **सत्संग** तथा **6 नवम्बर** (शुक्र) शाम 5 से 8 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** ग्रान्ड ऐक्सेलसीयर होटेल, अल मंकुल, कुवैत स्ट्रीट, बर दुबई, दुबई. **संपर्क :** 557316937

### अडालज त्रिमंदिर

दि. **11 नवम्बर** (बुध), रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

दि. **12 नवम्बर** (गुरु), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 -**नूतन वर्ष ( वि.सं. ) के अवसर पर दर्शन-पूजन**

दि. **14 व 16 नवम्बर** (शनि व सोम), शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **15 नवम्बर** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

### अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 ( पू. ) ( गुजराती ) पर सत्संग पारायण ( शिविर )

दि. **19 दिसम्बर** - **आप्तवाणी 14 भाग-5** (गुजराती) का विशेष विमोचन समारोह - शाम 4-30 बजे से

दि. **19 से 26 दिसम्बर** - सुबह 9-30 से 12-45 तथा शाम 4-30 से 7, रात 8-30 से 9-30 (सामायिक)

दि. **27 दिसम्बर** - सुबह 9-30 से 12 - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

**सूचना :** 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 30 नवम्बर 2015 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

### हैदराबाद

दि. **2 दिसम्बर** (बुध), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **3 दिसम्बर** (गुरु), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

दि. **4 दिसम्बर** (शुक्र), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड. **संपर्क :** 9393052836

### इन्दौर

दि. **5 व 7 दिसम्बर** (शनि-सोम), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **6 दिसम्बर** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** बास्केट बोल कॉम्प्लेक्स, रेसकोर्स रोड, जंजीरवाला चार रस्ता, ओल्ड पलासिया. **संपर्क :** 9039936173

### पाटन

दि. **9 दिसम्बर** (बुध), रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **11 दिसम्बर** (गुरु), शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

दि. **11 दिसम्बर** (शुक्र), रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** प्रगति मैदान, बलिया हनुमान मंदिर के पास, पाटन (गुजरात). **संपर्क :** 9408539775

### नडियाद

दि. **5 जनवरी** (मंगल), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **6 जनवरी** (बुध), शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

दि. **7 जनवरी** (गुरु), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** बासुदीवाला स्कूल ग्राउन्ड, चेतक पेट्रोल पंप के पास, नडियाद (गुजरात). **संपर्क :** 9408528520

अक्तूबर 2015
वर्ष - 10 अंक - 12
अखंड क्रमांक - 120

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

## वीतराग विज्ञान का सार है यह !

यह भावना करते समय कैसा होना चाहिए? पढ़ते समय हर एक शब्द नज़र के सामने दिखना चाहिए। यह भावना करने से पूर्ण होते जाओगे। भावना तो इतनी ही करने योग्य हैं। मन-वचन-काया की एकता से बोलें, वही भावना है। इसलिए अब आप ये नौ कलमें तो अवश्य करना। ये नौ कलमें पूरे वीतराग विज्ञान का सार हैं! और प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान सभी उसमें समा गया है। ऐसी नौ कलमें किसी जगह नहीं निकली थीं। जैसे यह ब्रह्मचर्य की पुस्तक नहीं निकली थी, उसी तरह ये नौ कलमें भी नहीं निकली थीं। यदि ये नौ कलमें पढ़ें न और भावना करें न, तो दुनिया में किसी के साथ बैर नहीं रहे, सभी के साथ मैत्री हो जाए। ये नौ कलमें तो सभी शास्त्रों का सार हैं !

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.